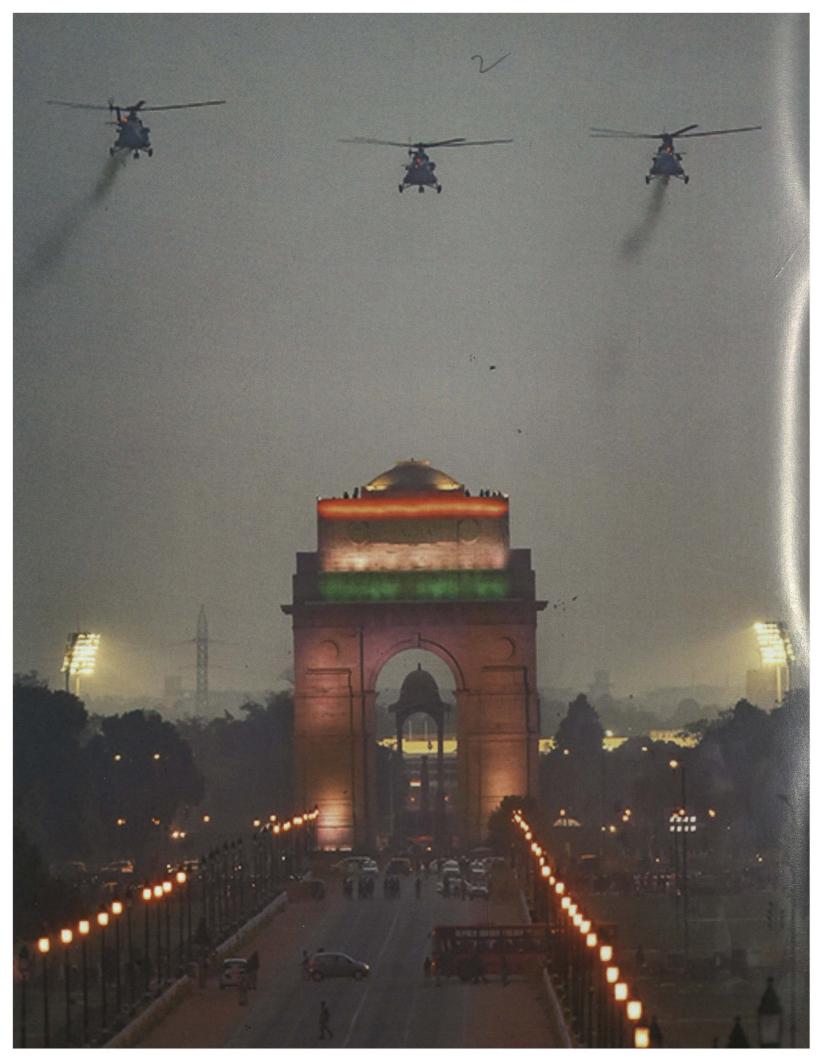


72वीं गणतंत्र दिवस परेड 72nd Republic Day Parade



26 जनवरी 2021 (6 माघ, 1942) 26 January 2021 (6 Magha, 1942)





72वीं गणतंत्र दिवस परेड 72nd Republic Day Parade

26 जनवरी 2021 (6 माघ, 1942) 26 January 2021 (6 Magha, 1942)





बांग्लादेश का सैन्य दस्ता

बांग्लादेश सशस्त्र सेनाओं की 122 सदस्यीय गौरवपूर्ण सैन्य टुकड़ी में शामिल हैं बांग्लादेश सेना के सैनिक, बांग्लादेश नौसेना के नाविक तथा बांग्लादेश वायु सेना के वायु सैनिक और इस सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व कमांडर लेफ्टिनेंट कर्नल अबु मोहम्मद शाहनूर शावों और उनके किनष्ठ लेफ्टिनेंट फरहान इशराक तथा फ्लाइंट लेफ्टिनेंट सिबत रहमान कर रहे हैं।

बांग्लादेशी सैन्य टुकड़ी आज बांग्लादेश के प्रसिद्ध मुक्तिजोद्हास की विरासत को संभाले हुए है जिन्होंने दमन और बड़े पैमाने पर अत्याचार के खिलाफ जंग लड़ी है और 1971 में बांग्लादेश को आजादी दिलाई। बहादुर मुक्ति बाहिनी और भारतीय बलों ने एक साथ मिलकर दुश्मन का मुकाबला किया और विजय प्राप्त की। बांग्लादेश की मिट्टी और पानी में मुक्ति बाहिनी और भारतीय जवानों के बलिदान का लहू सदैव समाहित रहेगा। यह एक अनूठा बंधन है। यह इतिहास में सालों साल अतुलनीय है।

बांग्लादेश सशस्त्र बलों की तीनों सेनाओं ने 1971 के बांग्लादेश स्वतंत्रता संग्राम में अपने राष्ट्र को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1, 2, 3, 4, 8, 9, 10 और 11 ईस्ट बंगाल रेजिमेंट और 1,2 और 3 फील्ड रेजिमेंट आर्टिलरी के प्रतिनिधि जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था वे आज परेड में मार्च कर रहे हैं। बांग्लादेश की बहादुर नौसेना ने युद्ध के दौरान "ऑपरेशन जैकपॉट"

BANGLADESH MILITARY CONTINGENT

Bangladesh Armed Forces' 122 member proud contingent comprises soldiers of the Bangladesh Army, sailors of the Bangladesh Navy and air warriors of the Bangladesh Air Force, being led by the contingent Commander Lt Col Abu Mohammed Shahnoor Shawon and his deputies Lieutenant Farhan Ishraq and Flight Lieutenant Sibat Rahman.

The Bangladesh contingent today carries the legacy of legendary Muktijoddhas of Bangladesh, who fought against oppression and mass atrocities and liberated Bangladesh in 1971. The valiant Mukti Bahini and Indian forces fought side by side against the enemy and secured victory. The blood of Mukti Bahini and Indian soldiers mingled with the soil and water of Bangladesh. This is a bond like no other; it is unparalleled in the annals of history.

All the three services of Bangladesh Armed Forces had played a key role in securing independence for their country in the Bangladesh Liberation War of 1971. The representatives of the battalions that participated in Liberation War, like 1, 2, 3, 4, 8, 9, 10 and 11 East Bengal Regiment and 1,2 and 3 Field Regiment Artillery, are marching in today's parade. The valiant Bangladesh Navy had successfully

को सफलतापूर्वक संचालित किया जिसमें सी पोर्ट और रिवर पोर्ट में 26 शत्रु पोतों को नष्ट किया गया। भारतीय वायु सेना ने युद्ध के दौरान दीमापुर, भारत के बेस से 'किलो फ्लाइट' के हिस्से के रूप में दुश्मन के ठिकानों पर 50 सफल हवाई हमले किए।

बंगबुध शेख मुजिबुर रहमान के आदर्शों से प्रेरित और माननीय प्रधानमंत्री शेख हसीना के प्रेरणादायक नेतृत्व में बांग्लादेशी सशस्त्र बलों ने स्वयं को दक्षता और देशभक्ति के साथ निरंतर ही विकसित किया है जिससे समस्त विश्व में इसने संयुक्त राष्ट्र शांतिवार्ता ऑपरेशनों में नाम और ख्याति हासिल की है।

प्रेरक गीत 'शोनो एकती मुजिबुर-एर-थेके लोखो मुजिबुर' पर आगे बढ़ते हुए जिसका अर्थ है मुजिबुर की आवाज को सुनो जो उसके लाखों समर्थकों की है, लेफ्टिनेंट कर्नल बेनजीर अहमद के मार्चिंग बैंड द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इसके सैनिक हमारे दोनों राष्ट्रों के बीच दोस्ती की मशाल के पथप्रदर्शक है। यह हमें 1971 की पीढ़ी के साथ जोड़ते है।

जैसा कि भारत और बांग्लादेश राजनियक संबंधों की 50वीं वर्षगांठ मना रहे हैं और बांग्लादेश अपनी ऐतिहासिक स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ मना रहा है, तो हमारी गणतंत्र दिवस परेड में इन्हें पहली बार शामिल करके हम गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

conducted "Operation Jackpot" during the War, destroying 26 enemy ships in sea ports and river ports. The Air Force conducted 50 successful air strikes on the enemy targets during the War as part of "Kilo Flight", from the base in Dimapur, India.

Galvanised by the ideals of Bangabandhu Sheikh Mujibur Rahman and under the inspiring leadership of Prime Minister Sheikh Hasina, the Bangladesh Armed Forces have relentlessly developed itself with professionalism and patriotism, which has earned name and fame in UN peacekeeping operations across the world.

Marching to the awakening song of "Shono Ekti Mujibur-er theke lokkho Mujibur", meaning "Listen, the voice of Mujibur which has been multiplied by hundred thousands of his followers", played by the Marching Band led by Lt Col Banazir Ahmed, these soldiers are the torch bearers of the flame of friendship between our two countries; they link us with the generation of 1971.

We are honoured to have them for the first time in our Republic Day Parade, as India and Bangladesh celebrate 50 years of the establishment of their diplomatic ties and Bangladesh commemorates 50 years of its historic libration.

कार्यक्रम

0957 बजे राष्ट्रपति का राजकीय सम्मान सहित आगमन।

प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति की अगवानी।

प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रपति से रक्षा मंत्री, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय।

राष्ट्रपति तथा प्रधान मंत्री का मंच की ओर प्रस्थान।

राष्ट्र—ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान की प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।

गणतंत्र दिवस परेड आरंभ होती है।

सांस्कृतिक झाँकी।

विमानों द्वारा सलामी।

राष्ट्रीय सलामी।

राष्ट्रपति का राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।

Programme

0957 hrs The President arrives in State.

The Prime Minister receives the President.

The Prime Minister presents to the President, Raksha Mantri, the Chief of the Defence Staff, the three Service Chiefs and Defence Secretary.

The President and the Prime Minister proceed to the rostrum.

The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.

The Republic Day Parade commences.

The Cultural Pageant.

Flypast.

National Salute.

The President departs in State.

परेड क्रम

हेलीकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर परेड उप-कमांडर परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

बांग्लादेश की दुकड़ी

बैंड और मार्च करती हुई टुकड़ी

सवार दस्ते

61 घुड़सवार दस्ता

मैकेनाइज्ड दस्ते

टैंक टी- 90

बाल्वे मशीन पिकेट (बीएमपी - II/IIके)

ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली

पिनाका मल्टिपल लाँच रॉकेट प्रणाली

ब्रिज लेईंग टैंक (बीएलटी) टी-72

इंटर कम्यूनिकेशन इलैक्ट्रॉनिक वारफेयर प्रणाली

उन्नत शिल्का हथियार प्रणाली

उन्नत हल्के हेलीकॉप्टरों (एएलएच) द्वारा सलामी

मार्च करती हुई सैन्य टुकड़ियां

जाट रेजिमेन्टल केन्द्र

मैकेनाइज्ड इंफेन्ट्री रेजिमेन्टल केन्द्र

: बैण्ड ध्वनि "हँसते गाते"

: बैण्ड ध्वनि

"सरहद के

रखवाले"

पैरा रेजिमेन्टल केंद्र जाट रेजिमेन्टल केन्द्र

गढ़वाल राइफल्स रेजिमेन्टल केन्द्र

महार रेजिमेन्टल केन्द

सिख रेजिमेन्टल केन्द्र असम रेजिमेन्टल केन्द्र.

जम्मू एवं कश्मीर राईफल्स रेजिमेंटल केंद्र

जम्मू एवं कश्मीर राईफल्स रेजिमेंटल केंद्र

THE ORDER OF MARCH

Showering of flower petals by Helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

BANGLADESH's CONTINGENT

Marching and Band Contingent

ARMY

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanized Columns

Tank T-90

Ballway Machine Pikate (BMP-II/IIK)

Brahmos Missile System

Pinaka Multiple Launch Rocket System

Bridge Laying Tank (BLT) T-72

Inter Communication Electronic Warfare System

Upgraded Schilka Weapon System

Fly Past by Advance Light Helicopter (ALH)

Marching Contingents

Jat Regimental Centre

Mechanized Infantry Regimental

: Band playing "Haste Gaate"

Centre

Para Regimental Centre

Jat Regimental Centre

Garhwal Rifles Regimental Centre

Mahar Regimental Centre

Sikh Regimental Centre

: Band playing

Assam Regimental Centre

"Sarhad Ke

Jammu & Kashmir Rifles Regimental Rakhwale"

Centre

Jammu & Kashmir Rifles Regimental Centre

बंगाल इंजीनियर्स ग्रुप (रुड़की)

सिख लाईट इन्फैन्ट्री रेजिमेन्टल केन्द्र : बैण्ड ध्वनि लद्दाख स्काउट्स रेजिमेन्टल केन्द्र "बलिदान" आर्टिलरी केन्द्र (नासिक रोड)

प्रादेशिक सेना

नौसेना

नौसेना ब्रांस बैंड नौसेना की मार्च करती हुई टुकड़ी झाँकी

वायु सेना

वायु सेना बैंड वायु सेना की मार्च करती हुई टुकड़ी झाँकी

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

झाँकी में आईएनएस विक्रमादित्य से नौसेना के हल्के युद्धक विमान के अवतरण / उड़ान भरते हुए दिखाया गया है। सभी एन्टी टैंक निर्देशित मिसाइल की झाँकी

सीएपीएफ एवं अन्य सहायक बल

भारतीय तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी बैंडः सीआरपीएफ सीआरपीएफ की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंडः आईटीबीपी आईटीबीपी की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड : दिल्ली पुलिस दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी बीएसएफ ऊंटों की मार्च करती हुई टुकड़ी बैंड : सीमा सुरक्षा बल के ऊंट एनएसजी की मार्च करती हुई टुकड़ी और माउण्टेड कॉलम

राष्ट्रीय कैंडेट कोर

छात्रों की मार्च करती हुई टुकड़ी बैंडः सेना ब्रास बैंड छात्राओं की मार्च करती हुई टुकड़ी Bengal Engineers Group (Roorkee)

Sikh Light Infantry Regimental Centre : Band Playing Ladakh Scouts Regimental Centre "Balidan" Artillery Centre (Nasik Road)

Territorial Army

NAVY

Navy Brass Band Navy Marching Contingent Tableau

AIR FORCE

Air Force Band
Air Force Marching Contingent
Tableau

DEFENCE RESEARCH & DEVELOPMENT ORGANISATION

Tableau of Light Combat Aircraft-Navy-Landing/Take off from INS Vikramaditya

Tableau of all Anti Tank Guided Missiles.

CAPFS AND OTHER AUXILIARY FORCES

Indian Coast Guard Marching Contingent

Band: CRPF

CRPF Marching Contingent

Band: ITBP

ITBP Marching Contingent

Band: Delhi Police

Delhi Police Marching Contingent

BSF Camel Contingent

Band: BSF Camel

NSG Marching Contingent and Mounted Column

NATIONAL CADET CORPS

Boys Marching Contingent Band: Mil Brass Band Girls Marching Contingent

0)

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती हुई टुकड़ी सामूहिक पाइप एवं ड्रम बैंड

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झाँकी

- 28 (अठाईस)

बच्चों की प्रस्तुति

स्कूली बच्चों के कार्यक्रमः

- 1. दिल्ली तमिल एसोसिएशन स्कूल्स
- राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बी–2, यमुना विहार, दिल्ली
- 3. पूर्वी जोनल सांस्कृतिक केन्द्र (ईजेडसीसी), कोलकाता
- 4. माउंट आबू पब्लिक स्कूल, रोहिणी, दिल्ली और विद्या भारती स्कूल, रोहिणी, दिल्ली

विमानों द्वारा सलामी

(मौसम अनुकूल रहने पर)

निशान आकृति : राजपथ और 'नार्थ वाटर चैनल' के बीच 'वाईनग्लास'' की आकृति बनाते हुए एमआई — 17 वीठ हेलिकॉप्टर सलामी देते हुए। यह आकृति सलामी मंच के सामने की ओर परेड कमांडर से 10 सैकेंड पहले पहुंच रही है।

धुव आकृति : राजपथ और 'नार्थ वाटर चैनल' के बीच आर्मी एवियेशन कोर के चार उन्नत हल्के हेल्किॉप्टर ''हीरे की आकृति'' में उड़ान भरते हुए। यह आकृति सलामी मंच के सामने की ओर सेना व्हीकुलर कालम के साथ पहुँच रही है।

रूद्र आकृति : राजपथ और 'नार्थ वाटर चैनल' में बांये से दांये की ओर भारतीय वायु सेना के एक डकोटा विमान के नेतृत्व में दो एमआई—17 1V हेलिकॉप्टर वीआईसी आकृति में आगे बढ़ते हुए।

सुदर्शन आकृति : इस आकृति में एक चिनूक और दो एमआई—17 1V हेलिकॉप्टर्स शामिल है। राजपथ और 'नार्थ वाटर चैनल' के बीच बायें से दाहिनी ओर वीआईसी आकृति में सलामी देते हुए।

रक्षक आकृति : इस आकृति में एक एम आई—35 और चार अपाचे हेलिकॉप्टर्स शामिल हैं। राजपथ और 'नार्थ वाटर चैनल' के बीच बायें से दाहिनी ओर वीआईसी आकृति में सलामी देते हुए।

NATIONAL SERVICE SCHEME

National Service Scheme Marching Contingent Massed Pipes & Drums Bands

THE CULTURAL PAGEANT

Tableaux

- 28 (Twenty Eight)

CHILDREN'S PAGEANT

School Children Items:

- 1. Delhi Tamil Association Schools
- 2. Governent Girls Senior Secondary School, B-2, Yamuna Vihar, Delhi
- 3. Eastern Zonal Cultural Centre (EZCC), Kolkata.
- 4. Mount Abu Public School, Rohini, Delhi & Vidya Bharati School, Rohini, Delhi

FLY-PAST

[If weather conditions permit]

Nishan Formation: The formation comprises Mi-17 V5 helicopters are to fly past the dais in 'Wineglass' formation between Rajpath and 'Water Channel North'. The formation is to arrive abeam the dais 10 seconds before the Parade Cammander.

Dhruv Formation: The formation comprises ALH of the Army Aviation Corps would fly in 4 aircraft diamond formation between Rajpath and 'Water Channel North'. The formation is to arrive abeam the dais along with the Army Vehicular column.

Rudra Formation: The formation comprises one IAF Dakota leading two Mi-17 1V helicopter in vic formation from left to right between Rajpath and 'Water Channel North'.

Sudarshan Formation: The formation comprises 1x Chinook + 2 x Mi-17 1V helicopters. The formation is to fly past in Vic formation from left to right between Rajpath and 'Water Channel North'.

Rakshak Formation: The formation comprises 1 x Mi-35 + 4 x Apache helicopters. The formation is to fly past in Vic formation left to right over the 'Water Channel North'.

भीम आकृति : 'नार्थ वाटर चैनल' के 100 मीटर उत्तर में तीन सी–130 जे वीआईसी आकृति बनाते हुए।

नेत्र आकृति : इस आकृति में एक एईडब्ल्यू एण्ड सी विमान और दो एसयू—30 विमान शामिल हैं। भीम आकृति के डेढ़ मिनट के पश्चात यह आकृति 'नार्थ वॉटर चैनल' के 100 मीटर उत्तर से सलामी देते हुए पहुँच रही है।

गरूड़ आकृति : एक सी—17, दो मिग 29 (आंतरिक सदस्य) और दो एसयू—30 (बाहरी सदस्य) को शामिल करते हुए आकृति बनाई गई है। नेत्र आकृति के एक मिनट 15 सैकेंड के पश्चात यह आकृति 'नार्थ वाटर चैनल' के 100 मीटर उत्तर से 'वीआईसी आकृति' में सलामी देते हुए।

एकलव्य आकृति : एक राफेल, दो जगुआर (आंतरिक सदस्यों) और दो मिग—29 (बाहरी सदस्यों) के साथ गरूड़ आकृति के डेढ़ मिनट के पश्चात 'नार्थ वाटर चैनल' के उत्तर की ओर 'वीआईसी' आकृति बनाते हुए।

त्रिनेत्र आकृति : एकलव्य आकृति के एक मिनट के पश्चात 'नार्थ वाटर चैनल' के 100 मीटर उत्तर से तीन एसयू—30 एमकेआई विमान यह आकृति बना कर सलामी देते हुए।

विजय (सारंग) आकृति : 'नार्थ वाटर चैनल' और राजपथ के बीच वृक्षों की लाइनों के ऊपर तीन सारंग एएलएच सलामी देते हुए।

ब्रह्मास्त्र आकृति : 'नार्थ वाटर चैनल' के 100 मीटर उत्तर से विजय आकृति के 20 सैकेन्ड के पश्चात राफेल विमान उड़ान भरते हुए।

गुब्बारों का छोड़ा जाना : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग।

Bhima Formation: The formation comprises three C-130J in Vic formation 100 m north of the 'Water Channel North'.

Netra Formation: The formation comprises one AEW&C aircraft and two Su-30. The formation is to fly past in 100 m north of the 'Water Channel North', one and a half min behind Bhim formation.

Garuda Formation: The formation comprises a C-17, two MiG29 (inner members) and two Su-30 (outer members). The formation is to fly past in Vic formation in 100 m north of 'Water Channel North', one min 15 seconds behind Netra formation.

Eklavya Formation: The formation comprises one Rafale, two Jaguar (inner members) and two MiG-29 (outer members) in Vic formation in north of the 'Water Channel North', trailing Garuda formation by one and a half minute.

Trinetra Formation: The formation comprises three Su-30 MKI will fly past 100 m north of the 'Water Channel North', trailing Eklavya formation by one minute.

Vijay (Sarang) Formation: The formation comprises three Sarang ALH will fly past over the treeline between the Rajpath and the 'Water Channel North'.

Brahmastra Formation: The formation comprises one Rafale shall run-in 100 m north of the 'Water Channel North', trailing Vijay by 20 seconds.

Release of balloons: India Meteorological Department

सांस्कृतिक प्रस्तुति

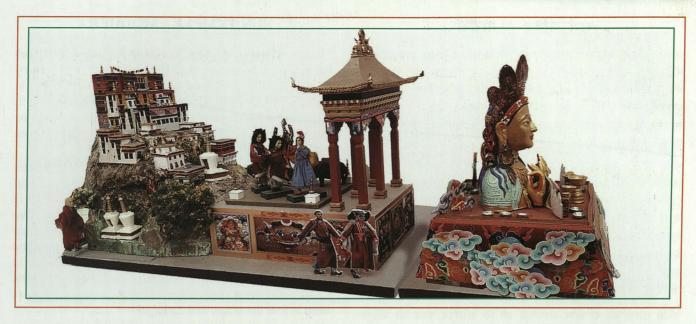
आज भारत अपना 72वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत की प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है।

रंग बिरंगी झांकियों का वर्ण-विन्यास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकी पहलुओं का चित्रण करता है। इन झांकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु-शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India is celebrating its 72nd Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisation, cultural diversity and progress symbolising India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India. These tableaux capture the beauty of our landscape and architectural heritage.



भविष्य का विजन

केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख, केंद्र शासित प्रदेश बनने के बाद पहली बार अपनी झाँकी प्रस्तुत कर रहा है जिसकी विषय वस्तु है "भविष्य का विजन"। इस झाँकी में लद्दाख के उत्सवों को विभिन्न संस्कृतियों के गुलदस्तों के माध्यम से दर्शाया गया है जो विभिन्न धर्मों और क्षेत्रों का सम्मिश्रण हैं।

शांतिपूर्ण और शांत, लद्दाख के लोग अपनी समृद्ध संस्कृति पर गर्व करते हैं, जिनकी जड़ों में इतिहास समाहित है, जिन्हें केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख के निवासियों द्वारा पोषित किया जा रहा है। इसकी कला और वास्तुकला, भाषाओं और बोलियों, रीति—रिवाजों और परिधानों, मेलों और त्यौहारों, साहित्य, शिल्प, संगीत आदि के अलावा केंद्रशासित प्रदेश (यूटी) अपनी अनूठी और समग्र संस्कृति और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए प्रसिद्ध है। इस परा—हिमालयी क्षेत्र की प्राचीन प्रकृति, पर्यावरण—विज्ञान एवम वातावरण पर पहली बार विशेष ध्यान, भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा इस भूभाग को 'कार्बन—मुक्त लद्दाख', बनाने का लक्ष्य निर्धारित करके दिया गया है।

झाँकी का अगला हिस्सा थिकसे मठ में कमल आसन में बैठे मैत्रेय बुद्ध की 49 फुट की प्रतिमा को दर्शाता है। दूसरा आधा हिस्सा प्रसिद्ध लेह गेटवे दिखाता है, इसके बाद पूर्वी लहाख के खानाबदोशों के बीच लोकप्रिय याक नृत्य का एक दृश्य है। भारत सरकार अब इस घटती संस्कृति को बचाने और बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है, जो भारतीय विविधता का गौरव है। झाँकी का पिछला हिस्सा, थिकसे मठ को दर्शाता है। 12—मंजिला मठ एक पहाड़ी के ऊपर बनाया गया है और एक अद्वितीय श्रेणीबद्ध तरीके से संरचित है। मठ की किले जैसी संरचना की तुलना अक्सर तिब्बत के पोटाला पैलेस से की जाती है, और इसीलिए इसे 'मिनी पेटला' कहा जाता है। डिजाइन के कई विकल्पों में से कुछ भविष्य की दृष्टि के संदर्भ में विभिन्न विषयवस्तुओं का चित्रण कर रहे हैं।

VISION OF THE FUTURE

The UT Ladakh presents its tableau, first time after becoming Union Territory (UT), on the theme "Vision of the Future". The Tableau depicts the celebration of Ladakh through its bouquet of different cultures which is composite of various religions and regions.

Peaceful & calm, the people of Ladakh are proud of their rich culture, rooted in history, is being cherished by the habitants of Ladakh. Beside its art & architectures, languages and dialects, customs and costumes, fairs and festivals, literature, crafts, music etc, the UT is famous for its unique & composite culture & communal harmony. The pristine nature, ecology and environment of this trans-Himalayan region was also being given due attention for the first time by setting a goal of 'Carbon Free Ladakh' by the Hon'ble Prime Minister of India.

The front portion depicts the 49-ft statue of the Maitreya Buddha in the lotus position of Thiksay Monastery. The second half shows the famous Leh Gateway, followed by a scene of Yak Dance popular among the Nomads of Eastern Ladakh. Govt. of India is now committed to save and promote this declining culture, which is a pride of Indian diversity. The rear portion showcases the Thiksay monastery. The 12-storeyed monastery is built on top of a hill and is structured in a unique hierarchical manner. The fort-like structure of the monastery is often compared to the Potala Palace of Tibet, and that is why it is referred to as 'Mini Potala'. Few of the alternative choices of design are depicting the various themes in terms of the future vision.

- UNION TERRITORY LADAKH

सूर्य मंदिर - मोढेरा

उत्कृष्ट शिल्प स्थापत्य, संस्कृति और संगीत को समेटे हुए विश्वप्रसिद्ध मोढेरा सूर्य मंदिर का निर्माण चालुक्य वंश (सोलंकी राजवंश) के राजा भीम—I ने लगभग 1000 साल पहले सन 1026—27 में उत्तर गुजरात में पुष्पावती नदी के तट पर मोढेरा गाँव में करवाया था। यह उस समय का सबसे प्रमुख सूर्य मंदिर था जो ओडिशा के कोणार्क सूर्य मंदिर से भी पहले बनाया गया था।

मंदिर परिसर मरू-गुर्जर शैली में बनाया गया है और इसमें तीन अक्षीय रूप से संरेखित घटक हैं; (1) गर्भगृह और गुढ़मंडप, (2) सभामंडप और (3) सूर्यकुंड। यह एक आर्किटेक्चरल चमत्कार है जिसकी नक्काशी के साथ की संरचना भव्य से परे है। हम यह कल्पना कर सकते हैं कि भूतकाल में कई बार सूर्य मंदिर पर हमला करके उसे नष्ट करने का प्रयास किया गया था, फिर भी यह अति प्राचीन सूर्य मंदिर अपने शिल्प स्थापत्य और वास्तुकला को लेकर आज भी विश्व प्रसिद्ध है, तो हमले और नुकसान से पहले कितना अधिक भव्य और मनमोहक रहा होगा!

कीर्ति तोरण की दो स्तंभ संरचनाएँ जो कि सोलंकी काल की महिमा और प्रसिद्धि को दर्शाती हैं उसे झाँकी के अग्र भाग में दिखाया गया है। झाँकी के पृष्ठ भाग में सभामंडप को दर्शाया गया है। सूर्य मंदिर का सभामंडप भाग सबसे प्रसिद्ध संरचना है जो व्यापक रूप से प्रसिद्ध है। इस सभामंडप में 52 खंभे है जो एक सौर वर्ष के 52 सप्ताह को दर्शाते हैं। भारी नक्काशीदार स्तंभों में रामायण, महाभारत और कृष्ण लीला के दृश्य है। सभामंडप का प्रवेश तोरण के माध्यम से होता है, जिसमें गहन और सटीक शिल्प कौशल का अद्भुत गुण है, जो कीर्ति तोरण की ताजपोशी करता है, जिसे सोलंकी राजपूत राजाओं द्वारा युद्ध के मैदान में उनकी जीत की याद में बनाया गया था।

सूर्य मंदिर अपने ऐतिहासिक शिल्प के अलावा यहाँ होते रहते लोकनृत्य के लिए भी जाना जाता है। प्रस्तुत झाँकी में सूर्य मंदिर के सभामंडप के आँगन में गुजराती महिला कलाकार अपना पारम्परिक "टिप्पनी" लोकनृत्य करती दिखाई दे रही हैं। झाँकी की दोनों पक्ष में भी महिला कलाकार चलते चलते शानदार "टिप्पनी" लोकनृत्य प्रदर्शन द्वारा दर्शकों का मन मोहित कर रही है।

– गुजरात

SUN TEMPLE - MODHERA

The world famous Modhera Sun Temple, which incorporates the exquisite craftsmanship, culture and music, was built by King Bhima-I of the Chalukya dynasty (Solanki dynasty) in the village of Modhera on the banks of the Pushpavati river in Gujarat, about 1000 years ago in the year 1026 - 27. It was the most prominent Sun Temple of this time, which was built even before the Konark Sun Temple in Odisha.

The temple complex built in Mâru-Gurjara style architecture has three axially aligned components; (1) Garbhagruh and Gudhamandap, (2) Sabhamandap and (3)Suryakund. It is an architectural spectacle, with its intricate carvings the structure is beyond grand. We can imagine that several times in the past, the Sun Temple was attacked and was tried to be destroyed, nevertheless, this ancient Sun Temple is world famous even today with its craft and architecture, so how much more grand and enchanting architecture must have been before the attack and damage!

The two pillar structures of Kirti Toran which signifies glory and fame of solanki period are shown in the front part of the tableau. The sabhamandap is shown on rear part. The sabhamandap part of the Sun Temple is the most famous widely renowned structure. This sabhamandap has 52 pillars denoting the 52 weeks of a solar year. The heavily carved pillars have scenes from Ramayana, Mahabharata & Krishna Leela. The entrance to the sabhamandap is through Toran arches, which have a marvellous quality of intricate and precision craftsmanship, crowning Kirti Toran, erected by Solanki Rajput kings to commemorate their victories in battle field. The Sun Temple is also known for its folk dance other than its extraordinary craft. In the tableau, the Gujarati female artists are seen performing the traditional "Tippani" folk dance in the courtyard of the Sabhamandap. On both the sides of Tableau the female artists are performing a radiant "Tippani" folk dance captivating the audience with their performance.

- GUJARAT





असम चाय-राज्य अर्थव्यवस्था की रीढ़

असम की झाँकी की विषय वस्तु है ''असम चाय—राज्य अर्थव्यवस्था की रीढ़''।

असम में चाय उद्योग लगभग 172 साल पुराना है। सन 1823 में रोबर्ट ब्रुस ने ऊपरी ब्रह्मपुत्र घाटी में जंगली उगने वाले चाय के पौधों की खोज की। इसके बाद, असम में चाय बागान के लिए, 'असम कंपनी' नामक एक कंपनी को 1839 में स्थापित किया गया और बागानों का तेजी से विस्तार हुआ। असम राज्य दुनिया का सबसे बड़ा चाय उगाने वाला क्षेत्र है जो सलाना लगभग 650 मिलियन किलोग्राम चाय का उत्पादन करता है और विश्व चाय बाजार में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी रखता है। राज्य अर्थव्यवस्था में बड़े पैमाने पर योगदान देने वाले 800 से अधिक बड़े चाय बागान हैं। चाय को असम का 'स्टेट ड्रिंक' घोषित किया गया है। चाय–बाग समुदाय चाय बाग श्रमिकों का एक बहु जातीय समूह है और राज्य द्वारा उन्हें आधिकारिक तौर पर ''चाय जनजातियों'' के रूप में स्वीकार किया गया है। 10 लाख से अधिक चाय जनजाति परिवारों की जीविका सीधे चाय उद्योग पर निर्भर है।

झाँकी के अग्र भाग में बगीचे से चाय की पत्तियाँ तोड़ती हुई एक महिला को दिखाया गया है। झाँकी के मध्य में चाय की पत्तियाँ तोड़ते हुए श्रमिकों के एक समूह को दिखाया गया है, जबिक चाय—जनजाति समुदाय की युवा महिलाओं का एक समूह झुमुर नृत्य कर रहा है। झुमुर असम के चाय—बाग समुदाय के बीच प्रसिद्ध एक भारतीय लोक नृत्य है। झाँकी के पृष्ठ भाग में एक सींग वाले गैंडे के समूह को दिखाया गया है, जो कि असम का राज्य—पशु है। युनेस्को का विश्व धरोहर स्थल, मध्य असम में स्थित काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, अपने एक सींग वाले गैंडे की आबादी के लिए विश्वस्तर पर जाना जाता है।

- असम

ASSAM TEA-THE BACKBONE OF THE STATE ECONOMY

The theme of the tableau of Assam is "Assam Tea-the Backbone of the State Economy".

Tea industry in Assam is about 172 years old. Robert Bruce in 1823 discovered tea plants growing wild in upper Brahmaputra Valley. Subsequently, for tea plantations in Assam, a company known as the Assam Company was formed in 1839 and the plantations expanded quickly. The state of Assam is the world's largest tea-growing region producing about 650 million kgs annually and commands significant share in the world tea market. There are over 800 big tea gardens in Assam contributing largely to the state economy. Tea has also been declared as the 'State Drink' of Assam. Tea-garden community is a multi ethnic group of tea garden workers and they are officially referred to as "Tea-tribes" by Government of Assam. The livelihood of over 10 lakhs tea-tribe families are directly dependent on the tea industry.

The front portion of the tableau depicts a woman plucking tea leaves from a garden. The tableau at centre, depicts a group of workers plucking tea leaves while a group of young ladies of the tea-tribe community performing a Jhumur Dance. Jhumur is an Indian folk dance famous among Tea-garden community of Assam. The rear portion of the tableau depicts a group of one-horned rhinoceros, the state animal of Assam. The UNESCO World Heritage Site, the Kaziranga National Park, located at central Assam, is known globally for its one-horned rhinoceros population.

- ASSAM

पल्लव राजवंश के स्मारक

तमिलनाडु की झाँकी की विषय वस्तु है "पल्लव राजवंश के स्मारक"।

पल्लव राजवंश जो सन 275 से सन 897 तक मौजूद था, वास्तुकला के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध था और इसने कई अखंड विशालकाय स्मारकों का निर्माण किया था। उसी राजवंश द्वारा निर्मित तमिलनाडु के चेंगलपट्टू जिले में मामल्लपुरम् शहर में स्थित तटीय मंदिर यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर स्थल है, जो विश्व के बेहतरीन स्थानों में से एक है।

इस झाँकी के सामने के हिस्से में नकुल—सहदेव रथ की अखंड पत्थर की मूर्ति दिखाई गई है। यह महाभारत में पांडवों और उनकी पत्नी द्रौपदी के नाम पर स्मारकों के ''पाँच रथों'' में से एक है। इस रथ के दोनों ओर, मामल्लपुरम में पाए गए शेर की मूर्तियां प्रदर्शित की गयी हैं। झाँकी के मध्य भाग में, अखंड मूर्ति ''अर्जुन की तपस्या'' प्रदर्शित की गई है। इसके पीछे नर्तिकयों का एक समूह भरतनाट्यम करता हुआ दिख रहा है।

झाँकी के पीछे का भाग पल्लव राजा नरसिंह वर्मन द्वितीय (राजसिम्हा) द्वारा सन 700 में बनाये गये मामल्लपुरम के प्रसिद्ध तटीय मंदिर का प्रदर्शन करता है। बंगाल के उपसागर की खाड़ी के किनारे पर स्थित यह सबसे पुराना मंदिर द्रविड़ शैली में निर्मित संरचनात्मक मंदिरों के पहले चरण का प्रतिनिधित्व करता है। झाँकी के दोनों ओर विविध संगीतकार, नादस्वरम और थविल के पारंपरिक वाद्ययंत्रों के साथ महाकवि भर्तियार के गीत बजाते दिख रहे हैं।

- तमिलनाडु

MONUMENTS OF PALLAVA DYNASTY

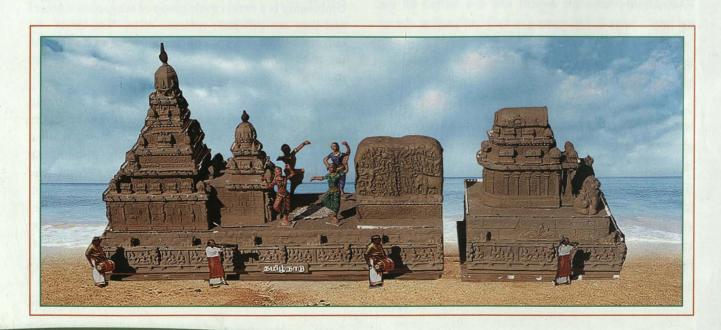
The theme of the Republic Day tableau of Tamilnadu is "Monuments of Pallava Dynasty"

The Pallava Dynasty which existed from 275 CE to 897 CE is noted for its patronage of architecture and has created many monolithic monuments. The Shore Temple in Mamallapuram town in Chengalpattu District of Tamil Nadu, a World Heritage Site declared by UNESCO, is one of the finest.

The tableau in the front portion showcases the monolithic rock sculpture of Nakula-Sahadeva Ratha. This is one among the "Five Rathas" group of monuments named after the Pandavas and their spouse Draupadi in Mahabharata. On either side of this Ratha, sculptures of lion found in Mamallapuram are displayed. In the middle portion, the monolithic sculpture "Arjuna's Penance" is displayed. Next to the Arjuna's Penance, a group of dancers performing Bharatanatyam is seen.

The rear portion showcases the famous Shore Temple of Mamallapuram, built by Pallava king Narasimha Varman II (Rajasimha) in the year 700 CE. This oldest temple set elegantly on the edge of the Bay of Bengal represents the first phase of structural temples constructed in Dravidian style. On either side of the tableau, live musicians play Mahakavi Bharathiyar's song with traditional musical instruments of Nadaswaram and Thavil.

- TAMIL NADU





महाराष्ट्र की संत परंपरा

महाराष्ट्र में मानवतावादी विचारों का प्रचार-प्रसार करने वाले महान संतों की परंपरा रही है। इस परंपरा का दर्शन झाँकी में प्रस्तुत किया गया है।

संतों ने अंधश्रद्धा, कर्मकांड, महिलाओं के प्रति भेदभाव आदि कुप्रथाओं के विरोध में जन—जागरण किया। उन्होंने समानता और भाईचारा जैसे मूल्यों का अपने कार्य, रचनाओं के द्वारा समाज में प्रचार किया। संत ज्ञानेश्वर महाराष्ट्र के तेरहवीं सदी के एक महान संत थे। उन्होंने मराठी भाषा में ज्ञानेश्वरी की रचना की। वह भागवत संप्रदाय के 'आद्य प्रवर्तकों' में भी माने जाते हैं।

झाँकी के प्रथम भाग में संत ध्यानेश्वर की प्रतिमा को प्रदर्शित किया है। जगत गुरु संत तुकाराम महाराज एवम् छत्रपति शिवाजी महाराज की ऐतिहासिक भेंट को भिक्त व शिक्त का प्रतीक माना जाता है। झाँकी के बीच में, इन दो महान हिस्तयों की भेंट को दिखाया गया है। महाराष्ट्र के अधिकांश संत श्री विठ्ठल के उपासक थे। पृष्टभाग के बीच में, उनकी मूर्ति को और उनकी भिक्त में डूबे भक्तों को वीणा और मृदंग की ताल पर नाचते हुए दर्शाया गया है। अभंग गाथा को संत साहित्य की प्रतिनिधि के रूप में पृष्ट भाग के अंत में दिखाया गया है। पृष्ट भाग के दोनों ओर संत नामदेव, संत शेख महमद, संत नरहरी, संत सावता, संत दामाजीपत, संत गोरोबा, संत जनाबाई, संत कान्होपात्रा, संत एकनाथ, संत सेना, संत चोखामेळा, संत निळोबा जैसे संतों की प्रतिकृति को दर्शाया गया है।

SAINTS OF MAHARASHTRA

Maharashtra has a tradition of great saints propagating humanistic values. This rich tradition is presented in the tableau.

The saints raised public awareness in protest against the evil practices, rituals, discrimination against women etc. They propagated values like equality and brotherhood in society through their works and preachings. Sant Dnyaneshwar was a great saint of the thirteenth century in Maharashtra. He composed Dnyaneshwari in Marathi language. He is also considered among the pioneers of the Bhagavat sect.

In the front part of the tableau, statue of sant Dnyaneshwar is shown. The historical meeting of Jagat Guru Sant Tukaram Maharaj and Chhatrapati Shivaji Maharaj is considered as a symbol of devotion and power. In the front part of the rear portion, the meeting of these two great personalities is shown. Most of the saints of Maharashtra were worshipers of Shri Vitthal. In the centre of the rear portion, His idol and devotees immersed in His devotion are shown dancing to the beat of Tall, Veena and Mridang. The Abhang Gatha is depicted as a representative of saint literature at the end of rear portion. On both sides of the rear portion are shown the replica of saints like Sant Namdey, Sant Sheikh Mahmand, Sant Narhari, Sant Savata, Sant Damajipant, Sant Goroba, Sant Janabai, Sant Kanhopatra, Sant Eknath, Sant Sena, Sant Chokhamela, Sant Niloba.

– महाराष्ट्र

-MAHARASHTRA

केदारखण्ड

उत्तराखण्ड की गणतंत्र दिवस की झाँकी का शीर्षक है "केदारखण्ड" जो केदारखण्ड मंदिर और राज्य के अन्य प्रतीकों को दर्शाती है।

आध्यात्मिक भूमि उत्तराखण्ड जहाँ एक ओर जीवन दायिनी गंगा, यमुना बहती है तथा दूसरी ओर चार धाम पवित्र तीर्थ स्थल विद्यमान हैं वहीं हिर का द्वार अर्थात हिरद्वार है। उत्तराखण्ड आध्यात्मिक शांति अथवा योग के लिए सबसे अनुकूल धरती है। इसलिए उत्तराखण्ड को देवभूमि भी कहा जाता है।

झाँकी के अग्रभाग में उत्तराखण्ड का राज्य पशु कस्तूरी मृग दर्शाया गया है जो उत्तराखण्ड के वनाच्छादित हिमशिखरों में 3600 से 4400 मीटर की ऊंचाई पर पाया जाता है। उत्तराखण्ड का राज्य पक्षी मोनाल तथा राज्य पुष्प ब्रह्म कमल भी दिखाया गया है जो केदारखण्ड के साथ—साथ उच्च हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाता है। झाँकी के मध्य भाग में भगवान शिव के वाहन नंदी को दर्शाया गया है तथा साथ में केदारनाथ धाम में यात्रियों को यात्रा करते हुए तथा श्रद्धालुओं को भिवत में लीन दर्शाया गया है। झाँकी के पृष्ठ भाग में बारह ज्योर्तिलिंगों में से एक बाबा केदार का भव्य मंदिर दर्शाया गया है जिसका जीणोंद्धार आदिगुरू शंकराचार्य ने कराया था। साथ ही मंदिर के ठीक पीछे विशालकाय दिव्य शिला को दर्शाया गया है। इसी दिव्य शिला की वजह से वर्ष 2013 की आपदा में केदारनाथ मंदिर सुरक्षित रहा था।

– उत्तराखण्ड

KEDARKHAND

The Republic Day tableau of Uttarakhand is on the theme "Kedarkhand" showing Kedarnath Temple and other important symbols of the state.

Spiritual Devbhoomi Uttarakhand where Ganga Yamuna flows on one side and Chardham holy pilgrimage site exists on the other side, Haridwar, the gate of Lord Hari is there only. Uttarakhand is the most favorable land for spiritual peace or yoga. That is why Uttarakhand is also called Dev Bhoomi.

In the front portion of the tableau, Uttarakhand's state animal musk deer is depicted which is found in the forested snow peaks of Uttarakhand at an altitude of 3600 to 4400 meters. The state bird Monal and the state flower Brahmakamal of Uttarakhand are also shown which are found in the Kedarkhand as well as in the higher Himalayan regions. In the middle of the tableau, Nandi, the vehicle of Lord Shiva, is shown, travellers traveling in Kedarnath Dham and devotees absorbed in devotion are also shown in the middle portion. The rear portion of the tableau depicts a grand temple of Lord Kedar, one of the twelve Jyotirlingas, whose renovation etc. was done by Guru Shankaracharya. Giant Divya Shila is shown just behind the temple. Due to this divine rock, Kedarnath temple was safe in the disaster of 2013.

- UTTARAKHAND





छत्तीसगढ़ के लोक-संगीत का वाद्य-वैभव

प्रस्तुत झाँकी में छत्तीसगढ़ के जनजातीय क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाले लोक—वाद्यों को उनके सांस्कृतिक परिवेश के साथ प्रदर्शित किया गया है, जिसमें राज्य के दक्षिण में स्थित बस्तर से लेकर उत्तर में स्थित सरगुजा तक विभिन्न अवसरों पर प्रयुक्त होने वाले लोक—वाद्य शामिल किए गए हैं, जो राज्य के स्थानीय तीज—त्योहारों तथा रीति रिवाजों में निहित सांस्कृतिक मूल्यों को रेखांकित करते हैं। जनजातीय कलाओं से समृद्ध छत्तीसगढ़ का लोक—संगीत बहुत वैभवशाली है। प्रकृति की प्रेरणा से जन्मा और फला—फूला यह संगीत आज भी पुरातन—शुद्धता के साथ यहां के तीज—त्योहारों और रीति—रिवाजों में उपस्थित है। इसमें छत्तीसगढ़ के अलावा अन्यत्र दुर्लभ अनूठे वाद्यों का प्रयोग होता है। इन वाद्यों में प्रकृति से जुड़ी अपनी ध्वन्यात्मक अनुभूतियों को सहेजते हुए लोगों ने इन्हें अपनी संगीत—परंपरा में शामिल किया है।

झाँकी के प्रारंभ में धनकुल वाद्य—यंत्र दर्शाया गया है, जिसका प्रयोग बस्तर संभाग में 'तीजा—जगार' और 'लक्ष्मी—जगार' जैसे विशेष अनुष्ठानों में होता है। रोजमर्रा में काम आने वाले सूप, मटके तथा धनुष जैसी चीजों से मिलकर यह वाद्य बनता है। झाँकी के बीच में तोड़ी अथवा तुहरी वाद्ययंत्र हैं, जिसे शुभ अवसरों पर फूंककर बजाया जाता है। तोड़ी के ऊपर बस्तर के गौर—नृत्य को प्रदर्शित किया गया है, महिला नर्तिकयां भी प्रदर्शित हैं जो गुजरी नाम का विशेष वाद्य लिए हुए हैं, जो छड़नुमा होता है, जिसके शीर्ष पर लोहे की फलियां लगी होती हैं। नृत्य के दौरान गुजरी के दूसरे सिरे से जमीन पर ताल दी जाती है। सबसे पीछे गौर नृत्य के दौरान ढोल बजाता पुरुष प्रदर्शित है। झाँकी के दोनों किनारों पर नृत्य कर रहे नर्तक विभिन्न तरह के ताल—वाद्यों के साथ प्रदर्शित किए गए हैं। अन्य वाद्यों में अगलगोजा, कोंपडोडका, मांदर, देव नगाड़ा, डाहक, नगाड़ा, दफड़ा, सारंगी, बांस आदि को झाँकी में प्रदर्शित किया गया है।

-छत्तीसगढ

SPLENDOR OF MUSICAL INSTRUMENTS IN CHHATTISGARH'S FOLK MUSIC

The tableau depicts the folk instruments used in tribal areas of Chhattisgarh with its cultural surroundings, which include folk instruments used on various occasions from Bastar in the south to Surguja in the north of the state, highlighting cultural values inherited in state's local customs and festivals.

Chhattisgarh has a spectacular folk music enriched with tribal folk arts. Inspired and nourished by the nature, this folk music still persists in its pristine form in the customs and festivals, using unique instruments only found in Chhattisgarh. Preserving their sense of musical expression through nature, the people have given these instruments a place in their musical tradition.

The front of the tableau shows instrument "Dhankul", used on the occasion of special rituals in Bastar division such as 'Teeja-jagaar' and 'Laxmi-jagaar'. This is made from objects used in day-to-day life like earthen pot, bow and bamboo cane. The middle portion depicts instruments 'Todi', and 'Tuhri', which are played on auspicious occasions by blowing air into it. Bastar's 'Gaur' dance is displayed on 'Todi', female dancers carrying a special instrument called Gunja, which is an iron rod with iron bead on top are also shown. During the dance form, the other end of the rod is beaten again and again on the ground to create a rhythm. In the rear part, a male playing a drum while performing 'Gaur' dance is displayed. On both sides, dancers performing dance and playing various rhythmic instruments are seen. Other instruments displayed are 'agalgoja', 'copdodka', 'maandar', 'devnagada', 'daahak', 'nagada', 'dafadaa', 'sarangi', bamboo etc.

- CHHATTISGARH

श्री गुरु तेग बहादुर जी का 400वां प्रकाश पर्व

पंजाब राज्य द्वारा नौवें सिख गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी के 400वें प्रकाश पर्व को झाँकी के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। नौवें सिख गुरु, श्री गुरु तेग बहादुर जी के अद्वितीय और सर्वोच्च बिलदान को दर्शाती है, जिन्होंने मानवता, धार्मिक सह—अस्तित्व और धार्मिक स्वतंत्रता के मूल्यों को कायम रखने के लिए अपने जीवन का बिलदान दिया।

उनका जन्म अमृतसर में 1 अप्रैल, 1621 को हुआ, जिन्हें तेग़ बहादुर (तलवार के धनी) के नाम से जाना जाता है। मुग़लों के खिलाफ लड़ाई में वीरता दिखाने पर श्री गुरु तेग़ बहादुर जी के पिता एवं छठे सिख गुरु, श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी द्वारा उन्हें यह नाम दिया गया। एक महान दार्शनिक, अध्यात्मिक रहनुमा और किव श्री गुरु तेग़ बहादुर जी को प्रमुख रूप से 'हिंद की चादर' के रूप में जाना जाता है, जिनके 57 श्लोकों सहित 15 रागों में रची गुरबाणी आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज है। श्री गुरु तेग़ बहादुर जी ने श्री गुरु नानक देव जी के प्रेम, शांति, समानता और मानव जाति में आपसी भाईचारे के शाश्वत संदेश का प्रचार करते हुए पूरे भारत में दूर—दराज़ तक यात्रा की।

पूरी झाँकी 400वें प्रकाश पर्व की दिव्य और निर्मल आमा दर्शा रही है। अग्र भाग पावन पालकी साहिब से शुरू होता है। पृष्ठ भाग की शुरुआत में "प्रभात फेरी" में संगत को कीर्तन करते हुए दिखाया गया है। पृष्ठ भाग के आख़िरी भाग में गुरुद्वारा श्री रकाब गंज साहिब को दर्शाया गया है। गुरुद्वारा साहिब उस स्थान पर सुशोभित है, जहाँ लक्खी शाह वंजारा जी और उनके पुत्र भाई नगाहिया जी ने नौवें सिख गुरु, श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी के बिना शीश के शरीर का अंतिम संस्कार करने के लिए अपना घर जला दिया था और उसी स्थान पर अस्थियों को दफ़न कर दिया गया था। श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी को इस्लाम में धर्मान्तरण से इन्कार करने पर मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब के आदेश पर 11 नवंबर, 1675 को चाँदनी चौक, दिल्ली में शहीद कर दिया गया था।

400TH BIRTH ANNIVERSARY OF SRI GURU TEGH BAHADUR JI

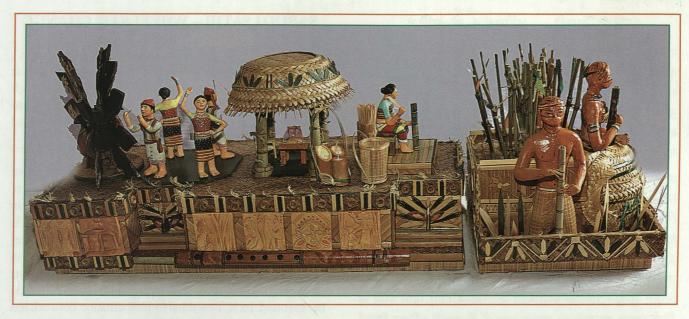
Punjab presents 400th Prakash Purb of ninth Sikh Guru Shri Tegh Bahadur Ji as the theme of the tableau reflecting the unparalleled and supreme sacrifice of ninth Sikh Guru Sri Guru Tegh Bahadur Ji who laid down his life to uphold the value of humanity, religious coexistence and freedom of faith.

Born in Amritsar on 1st April 1621, he came to be known by the name *Tegh Bahadur* (Mighty of the Sword), given to him by the Sixth Sikh Guru Sri Guru Hargobind Sahib Ji, the father of Sri Guru Tegh Bahadurji, after he had shown his valour in a battle against the Mughals. Sri Guru Tegh Bahadur Ji prominently known as 'Hind Di Chadar' was a great philosopher, a spiritual leader, a poet who composed Gurbani in 15 raags apart from 57 Shalokas included in the Adi Sri Guru Granth Sahib Ji. Sri Guru Tegh Bahadur Ji travelled far and wide throughout India, preaching Sri Guru Nanak Dev Ji's eternal message of love, peace, equality and brotherhood amongst the mankind.

The entire tableau presents divine and serene aura marking the 400th Prakash Purb. The front portion starts with the holy Palki Sahib. The rear portion shows the Prabhat Pheri in the beginning with people reciting kirtan. The end of the rear portion shows the Gurdwara Sri Rakab Ganj Sahib. The Gurdwara marks the site, where Lakhi Shah Vanjara and his son Bhai Naghaiya burnt their own house to cremate the headless body of the Ninth Sikh Guru Sri Guru Tegh Bahadur Sahib Ji, who was martyred on 11th November, 1675 at Chandni Chowk, Delhi on the orders of the Mughal emperor Aurangzeb for refusing to convert to Islam and buried the ashes in the house itself.

-PUNJAB





पर्यावरण अनुकूल आत्म–निर्भर त्रिपुरा

त्रिपुरा, जो 19 जनजातियों का निवास और पूर्वोत्तर भारत के सबसे छोटे राज्यों में से एक है, में बांस के भरपूर संसााधन हैं। इस वर्ष की झाँकी पर्यावरण अनुकूल आत्म—निर्भर त्रिपुरा के निर्माण में बांस के पारंपरिक उपयोग पर आधारित है।

इस झाँकी में आदिवासी जीवन के प्रत्येक पहलू में बांस का प्रयोग करने की त्रिपुरा की परंपरा पर प्रकाश डाला गया है। 'लमपरा वथाँप मवताई' नामक एक देवता के रूप में बांस की पूजा करने की प्रथा त्रिपुरा राज्य के बांस की समृद्ध विरासत को दर्शाती है। इस झाँकी में त्रिपुरी समाज के बांस नृत्य 'लेबांग बूमानी' को दर्शाया गया है। इस नृत्य में युवा लड़के और लड़कियां बांस की छीटों की मदद से लेबांग नामक कीड़े को दूर भगाने या पकड़ने के लिए झूम के खेत में जाते हैं।

झाँकी के अग्रभाग में एक आदिवासी महिला और दो आदिवासी पुरुषों के माध्यम से ग्रामीण जीवन और संस्कृति की झलक दिखायी गयी है और झाँकी के विभिन्न हिस्सों में बांस की विभिन्न प्रजातियां और झाँकी के मॉडलों को बांस के मुखौटे पहने दिखाया गया है। झाँकी का मध्य भाग जनजातियों के सामाजिक—आर्थिक जीवन को दर्शाता है। बांस की बनी विभिन्न उपयोगी वस्तुएं झाँकी में प्रदर्शित की गई हैं। झाँकी का पृष्ठ भाग राज्य की सामाजिक—सांस्कृतिक परंपरा और हस्तशिल्प पर केंद्रित है।

– त्रिपुरा

ECO-FRIENDLY ATMA-NIRBHAR TRIPURA

Tripura, home to 19 Tribes and one of the smallest states of North-East India, has a rich resource of bamboo. This year tableau is modelled on traditional use of bamboo on making ECO-FRIENDLY ATMA – NIRBHAR TRIPURA.

In this tableau, Tripuri tradition of using Bamboo as an integral part of every aspect of tribal life is highlighted. Practice of worshipping bamboo as one of the Gods named 'Lampra Wathop Mwtai" shows rich heritage of bamboo of the State of Tripura. This tableau showcases bamboo dances 'Lebang Boomani' of Tripuri Community. In this dance young boys and girls visit jhum field to drive away or catch the insects called Lebang using bamboo splits.

The glimpse of the tribal rural life and culture is shown at the front portion of the tableau with a tribal woman flanked by two tribal men and different species of bamboo fixed on the out part of the tableau models are seen wearing bamboo-masks. The middle portion displays the socio-economic life of tribes. Different utility items made from bamboo are displayed on the tableau. The rear portion of the tableau focuses on socio-cultural tradition and handicrafts of the State.

- TRIPURA

सबुज साथी - परिवर्तन के पहिये

पश्चिम बंगाल की झाँकी में प्रदर्शित किया जा रहा है सबुज साथी, अथवा नव ऊर्जा से भरपूर युवाओं का हरित मित्र, जो राज्य सरकार की वह योजना है जो पश्चिम बंगाल के 12,000 सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों के नवीं कक्षा से बारहवीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों को साइकिल वितरण के माध्यम से उच्च शिक्षा की पहुँच का मार्ग सुगम करती है।

अक्टूबर 2015 में इस योजना के शुरू होने के बाद लगभग 100 लाख विद्यार्थियों (47 लाख छात्र और 53 लाख छात्राएं) को निःशुल्क साइकिलें दी जा रही हैं जिसने विद्यार्थियों, विशेष कर छात्राओं के लिए सशक्तिकरण की दिशा में आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। सबुज साथी योजना ने स्कूल—छूट में कमी, नवीं कक्षा में प्रवेश लेने की संख्या में वृद्धि तथा वर्ण, संप्रदाय, लिंग, अथवा उनकी आर्थिक परिस्थिति का ख्याल किए बिना सभी के लिए समान अवसरों का सृजन करने में भी महती भूमिका निभाई है। इसके आईसीटी—सक्षम क्रियान्वयन नेटवर्क को बहुत से गौरवपूर्ण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं।

झाँकी के अग्र भाग में एक छात्रा लैपटॉप और अन्य उपकरण के साथ दिखाई दे रही है जो शिक्षा के जिए सशक्तिकरण को प्रदर्शित कर रहा है। पिछले हिस्से में सबुज साथी योजना द्वारा प्रोत्साहित होकर विद्यालय के प्रवेश—द्वार की ओर बढ़ते हुए साइकिल पर सवार छात्र/छात्राओं का एक समूह है जो बड़े पैमाने पर विद्यार्थियों के उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर होने को इंगित कर रहा है। झाँकी के आखिरी भाग में कुछ पुस्तकें और फाउण्टेन पेन का निब ज्ञान और अधिगम के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है।

- पश्चिम बंगाल

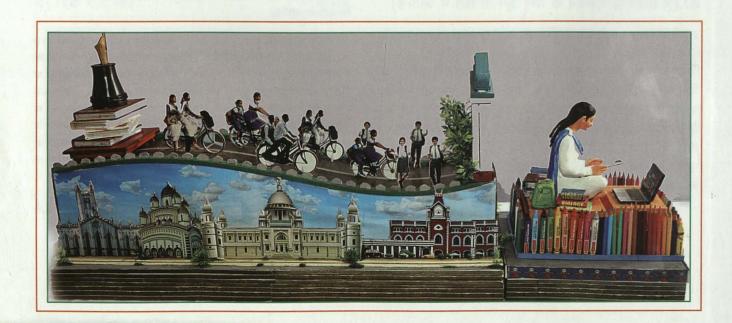
SABOOJ SATHI - WHEELS OF CHANGE

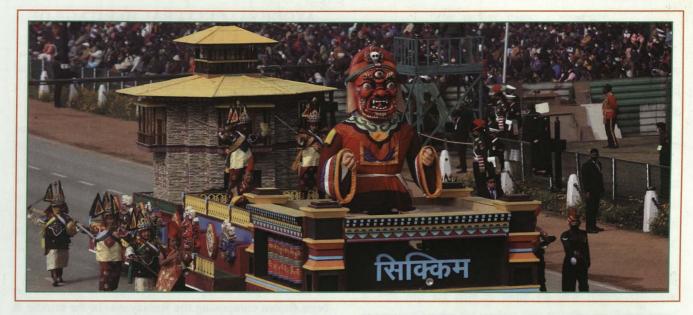
The tableau of West Bengal showcases 'Sabooj Sathi', or the Green Companion - a State Government scheme aimed at increasing access to higher education through distribution of bicycles to all students in classes IX to XII across 12,000 Government and Government-Aided Schools of West Bengal.

Since the launch of the scheme in October, 2015, about 100 lakh students (47 lakh boys and 53 lakh girls) are being given free bicycles which have brought a paradigm shift in the empowerment of students in general and girls in particular. It has now turned into a fundamental gamechanger by reducing dropouts, increasing enrolment in class IX, and creating equal opportunities for all students irrespective of their creed, gender, or financial background. Its ICT-enabled implementation network has won prestigious national and international awards.

The front portion of the tableau features a girl student with a laptop and other tools, representing empowerment through education. The rear portion showcases a phalanx of young students, mounted on bicycles, and directed towards a school gate, symbolizing mass transition of students towards higher education, incentivised by 'Sabooj Sathi'. At the rear end of the tableau, a stack of books and a nib of fountain pen has been exhibited to symbolige knowledge and learning.

- WEST BENGAL





पांग्तेय छाम (पांग लाबसोल महोत्सव)

सिक्किम की झाँकी में 'पांग्तेय छाम' को प्रदर्शित किया गया है — पांग लाबसोल, जो सिक्किम के लिए अद्वितीय त्योहार माना जाता है और इस दौरान राजकीय अवकाश रहता है, के दौरान देवी—देवताओं की प्रशंसा में किया जाने वाला योद्धा—नृत्य की कल्पना और कोरियोग्राफी 17वीं सदी में सिक्किम के तीसरे महाराजा, छोंग्याल चाकदोर नामग्याल द्वारा की गयी थी।

पांग्तेय छाम पांग लाबसोल पर्व का मुख्य आकर्षण है, जो चंद्र कलेण्डर के सातवें महीने के 15वें दिन मनाया जाता है, जो ग्रेगोरियन कलेण्डर के अनुसार अगस्त—सितम्बर होता है। यह नृत्य सिक्किम के बौद्ध मठ में किया जाता है। नृत्य अनिवार्य रूप से एक विजय नृत्य है, जहाँ आम आदमी तलवारें और ढाल लिए हुए और जीत के बैनर से सजाया हेलमेट (टोप) पहने हुए देवताओं की प्रशंसा और दुश्मनों के खात्मे के उत्सव में अपने ढपल्हा (योद्धा भगवान) के रूप में कंचनजंगा पर्वत का आहवान करता है। केंद्रीय देवताओं के रूप में डजोंड्गा और येशे गोंपो (महाकाल) के साथ नर्तक विस्तृत ब्रोकेड कपड़े (जरी वस्त्र) और मास्क पहनते हैं।

झाँकी के सामने माथे पर खोपड़ी के साथ लाल रंग में देवता ड़जोंड्गा हैं। झाँकी के मध्य भाग में 'पांग्तेय छाम' को दर्शाया गया है। नर्तकों को हेलमेट के चारों ओर चार ब्रोकेड झंडों के साथ 'मोक' नामक भारी हेलमेट पहने हुए दिखाया गया है जो भूटिया पोशाक पहने हुए हैं और बाएं हाथ में ढाल और दाहिने हाथ में तलवार लिये हुए हैं। झाँकी के पीछे का हिस्सा बौद्ध मठ के सामने येशे गोंपो को प्रदर्शित करता है।

- सिविकम

PANGTOED CHHAM (PANG LHABSOL FESTIVAL)

The tableau of Sikkim showcases 'Pangtoed Chham' – warrior dance in praise of the deities which is performed during Pang Lhabsol, a festival unique to Sikkim and a state holiday in the state. This warrior dance was visualized and choreographed by the 3rd Maharaja of Sikkim, Chogyal Chakdor Namgyal in the 17th Century.

The Pangtoed Chham is the highlight of the Pang Lhabsol which is celebrated in Sikkim on the fifteenth day of the seventh month of the lunar calendar corresponding to August-September of the Gregorian calendar. The dance is performed in monasteries in Sikkim. The dance is essentially a victory dance, where laymen carrying swords and shields and wearing helmets decorated with banners of victory, praise the deities and invoke Mount Khangchendzonga as their Dablha (warrior god) in celebration of the subjugation of enemies. The dancers wear elaborate brocade dresses and masks with Dzonga and Yeshe Gonpo as the central deities.

The front of the tableau has the deity Dzonga in red with skull on the forehead. The middle portion of the tableau depicts the Pangtoed Chham. The dancers are seen wearing a heavy helmet called 'mok' with four brocade flags tugged around the helmet and wearing the Bhutia dress and wielding a shield in the left hand and sword in the right. The rear portion of the tableau displays Yeshe Gonpo in front of the monastery.

- SIKKIM

अयोध्या : उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर

उत्तर प्रदेश की ''अयोध्याः उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर'' विषय पर प्रस्तुत झाँकी अयोध्या की सांस्कृतिक विरासत, संस्कार और सौंदर्य को प्रदर्शित करती है।

अयोध्या के राजा ब्रम्हा के पुत्र मनु के पुत्र इक्ष्वाकु द्वारा बसायी गयी अयोध्या उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक नगरी कहलाती है। इसे अष्टचक्र नवद्वार से युक्त अयोध्या कहा गया है जिसका वर्णन अथर्ववेद में प्राप्त होता है। महर्षि वाल्मीिक द्वारा रचित रामायण में भगवान राम का जन्म स्थान अयोध्या है। श्रीराम जन्म भूमि अयोध्या पूरे विश्व में सनातन संस्कृति का प्रतीक स्थल है।

झाँकी के प्रथम भाग में महर्षि वाल्मीिक को रामायण की रचना करते हुए दर्शाया गया है। झाँकी के मध्य एवं पृष्ठ भाग में जनभावनाओं एवं भिक्त से जुड़े अयोध्या की सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक श्रीराम मन्दिर को दर्शाया गया है। मन्दिर का यह माँडल बरबस भिक्त एवं श्रृद्धा का भाव पैदा करता है। मध्य झाँकी के अग्रभाग में अयोध्या के दीपोत्सव को दिखाया गया है, जिसमें लाखों दिए जलाए जाते हैं। वर्ष 2017 से भव्य दीपोत्सव के आयोजन ने ''गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड'' में लगातार नाम दर्ज कराया है। झाँकी के पार्श्व भागों में भित्ति चित्रों में भगवान राम का निषादराज को गले गलाना, शबरी के बेर खाना, अहिल्या उद्धार, केवट संवाद, हनुमान जी द्वारा संजीवनी बूटी लाना, जटायू—राम संवाद, अशोक वाटिका आदि के दृश्यों को दर्शाया गया है। झाँकी के दोनों ओर साध्वी एवं संतों को, जो प्रभु राम के प्रति भिक्त भावना एवं अनन्य प्रेम के लिए जाने जाते हैं, प्रदर्शित किया गया है।

– उत्तर प्रदेश

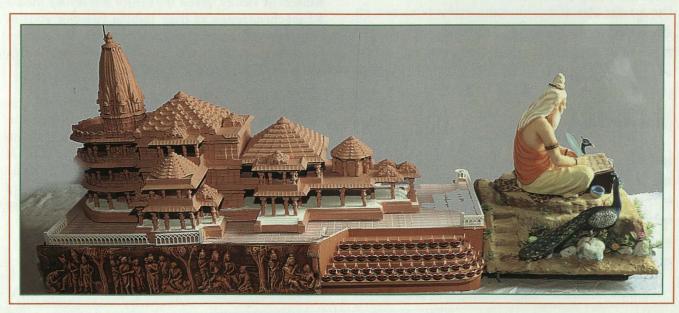
AYODHYA: CULTURAL HERITAGE OF UTTAR PRADESH

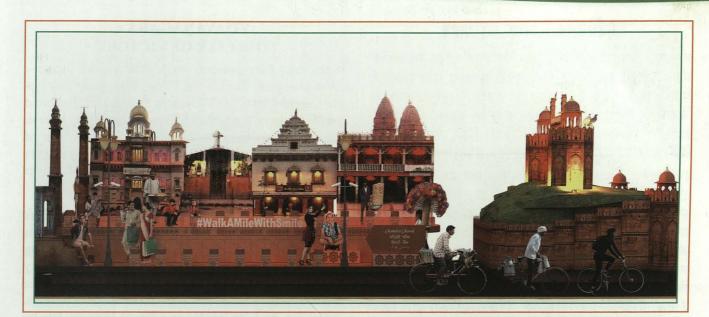
The tableau of Uttar Pradesh on the theme "Ayodhya: Cultural Heritage of Uttar Pradesh" showcases Ayodhya's ancient cultural heritage, values and beauty.

Ayodhya, the cultural City of Uttar Pradesh, was founded by Ikshvaku, the son of Manu, who was the son of Ayodhya's King, Brahma. It has been called Ayodhya having Ashtchakra Navadwar and its description is there in the Atharvaveda. The birth place of Bhagwan Ram is Ayodhya as has been described in the Ramayana composed by Maharshi Valmiki. Ayodhya, the birthplace of Shri Ram, is the epitome of 'Sanatan Sanskriti' (Ancient Culture) all over the world.

In the first part of the tableau, Maharishi Valmiki has been shown composing the Ramayana. In the middle & rear part of the tableau, Shri Ram Mandir, the epitome of Ayodhya's cultural identity associated with mass sentiments and devotion, has been shown. The model of temple in itself generates the feeling of devotion and reverence. The forepart of the middle tableau shows Deepotsava of Ayodhya, in which millions of earthen lamps are lit. The grand Deepotsava of Ayodhya has consistently made record since the year 2017 in the 'Guinness Book of World Record'. On the side panels, the mural shows embracing of Nishadraj and eating of Shabri's berry by Bhagwan Ram, salvation of Ahilya, Kewat Samvad, Hanuman Ji bringing Sanjivani Buti, Jatayu-Ram Samvad, Ashok Vatika and other scenes. On both sides of the tableau, sadhvis and sant, devoted to Bhagvan Ram and known to have expressed their love for Shri Ram, have been shown.

- UTTAR PRADESH





चाँदनी चौक का पुनर्विकास

यह झाँकी वाल्ड सिटी दिल्ली के चाँदनी चौक के पुनर्विकास के लिए चल रही परियोजना को प्रस्तुत करती है — ऐतिहासिक शहर शाहजहानाबाद के पर्यावरणीय संतुलन और स्थानीय अर्थव्यवस्था के विकास की एक झलक। इसके महत्वपूर्ण अंश हैं,—पैदल पथ, मोटर रहित वाहन पथ, जनसुविधाएं, वृक्ष श्रृंखला, भूमिगत उपयोगिता, कॉम्पेक्ट ट्रांसफॉर्मर, स्ट्रीट फायर हायड्रेंट, दुरूस्त मल निकासी व्यवस्था, सीसीटीवी, बैठकीय स्तम्भ, संकेतकों के साथ स्ट्रीट लाईट, इमारत सौंदर्यीकरण आदि।

झाँकी शुरु होती है भव्य लाल किले के मॉडल के साथ और समाप्त होती है फतेहपुरी मस्जिद की मीनारों के साथ। मध्य खंड प्रतिष्ठित उपासना स्थलों— जैन मंदिर के कंगूरे, बहुस्तरीय कटआउट से निर्मित गौरीशंकर मंदिर के साथ बैपटिस्ट चर्च और सुनहरे गुंबदों के साथ सीस गंज गुरुद्वारा सहित चाँदनी चौक की एक मील लंबी गली को दर्शाता है। रंगबिरंगी रोशनी में पुनः निर्मित गली की पृष्ठभूमि के लिए एक वास्तुकला की भव्य प्रतिकृति को नये कलेवर में दर्शाती है।

झाँकी का अंतिम हिस्सा इलाके की एक धरोहर हवेली के प्रवेश द्वारों से अलंकृत है जो बीते दौर की सांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिम्ब है जबिक झाँकी के दोनों ओर पुनर्विकसित गलियों के वास्तुशिल्प उस समावेशी पथ की पुनःकल्पना है, जिसमें खुले सार्वजिनक स्थान, सुरक्षित साईकिल लेन और सुगम फुटपाथ हो। झाँकी की जीवंतता साईकिल, रिक्शों और खरीदारों की चहल—पहल वाले गली बाजार और विभिन्न धार्मिक स्थलों से आने वाली प्रार्थना ध्वनियों से है। झाँकी के दोनो तरफ पैदल और साईकिल सवार लोग 'चाँदनी चौक का पुनर्विकास' विषय—वस्तु को प्रमोट कर रहे हैं।

REDEVELOPMENT OF CHANDNI CHOWK

The Tableau features ongoing redevelopment of Chandni Chowk in the Walled City of Delhi - a template for environmental sustainability & local economy development of the historic city of Shahjahanabad. The key elements are pedestrianised street, No Moter Vehicle (NMV) lanes, public amenities, avenue trees, underground utilities, compact transformers, street-fire hydrants, restored sewerage system, CCTVs, seating bolsters, street lights with signages, facade restoration etc.

The tableau begins with the magnificent Red Fort and ends with minarets of Fatehpuri Mosque. The middle section illustrates the mile-long street of Chandni Chowk with the iconic places of worship - the elevation of Jain Temple flanked alongside Gauri Shanker Temple built as multi-layered cutouts followed by design of Baptist Church and the Sis Ganj Gurdwara with its golden painted domes. The entire architectural replica with colourful lighting acts as the backdrop to the redesigned street.

The end of tableau ornate with entrance gates of a heritage haveli from the area reflects the charms of cultural heritage of bygone eras while architectural elements of the redeveloped streets on both sides of the tableau reimagine inclusive streets with open public plazas, safe cycle lanes and accessible walkways. Life of the tableau is the hustle-bustle of Market Street enlivened with cycles, rickshaws, shoppers etc., interspersed with the sound of prayers from diverse places of worship. People walking and cycling on either side of the tableau are promoting the theme of 'Redevelopment of Chandni Chowk'.

- दिल्ली

- DELHI

विजयनगर: जीत का शहर

कर्नाटक राज्य 'विजयनगर: जीत का शहर' शीर्षक पर अपनी झाँकी प्रस्तुत करता है। विजयनगर साम्राज्य की राजधानी विजयनगर कर्नाटक के दख्खन पठार क्षेत्र में तुंगभद्रा नदी के किनारे पर स्थित था। संयोगवश, कर्नाटक सरकार ने भी वर्ष 2020 के दिसम्बर माह में ही बल्लारी ज़िले से पृथक कर विजयनगर को राज्य का 31वां जिला घोषित किया है।

इस साम्राज्य की स्थापना वर्ष 1336 में संगमा वंश के दो भाइयों हिरहर—प्रथम और बुक्का—प्रथम ने की थी। यह साम्राज्य जब अपनी सफलता की ऊँचाईयों पर था तब इसमें दक्षिण प्रांतों में राज्य करने वाले राजघरानों तथा दख्खन प्रांतों के सुल्तानों को अपने अधीन कर लिया था। इस साम्राज्य में दक्षिण प्रांतों की अनेक विरासत मौजूद हैं जिसमें हम्पी जो अब पुरातत्व अवशेष मात्र रह गए हैं, सबसे प्रमुख है। हम्पी को आज संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा विश्व विरासत के रूप में घोषित किया गया है। यूरोप के इतिहासकार एवं फारसी पर्यटकों के साथ—साथ पुरातत्ववेताओं ने विजयनगर साम्राज्य की शक्ति व सम्पदा को प्रकट किया है।

सन 1500 तक, मध्यकालीन युग में बीजिंग के बाद हम्पी—विजयनगर विश्व का दूसरा सबसे बड़ा शहर था एवं निसंदेह उस काल का भारत का सबसे समृद्धशाली साम्राज्य था जो पर्शिया व पुर्तगाल के व्यापारियों को सबसे ज्यादा आकर्षित करता था।

झाँकी के अग्र भाग एवं पृष्ठ भाग के अगले हिस्से में हम्पी के मुख्य आकर्षण— उग्र नरिसम्हा एवं अन्जनाद्रि पहाड़ी, जो कि पवनपुत्र हनुमान की जन्मभूमि मानी जाती है, को दर्शाया गया है। इसके बाद झाँकी में वर्ष 1509 के विजयनगर साम्राज्य के सबसे अच्छे सम्राट श्री कृष्णदेवराय का राज्याभिषेक दिखाया गया है। झाँकी पर हजारा—राम मंदिर के भित्ति चित्रों को भी दर्शाया गया है।

- कर्नाटक

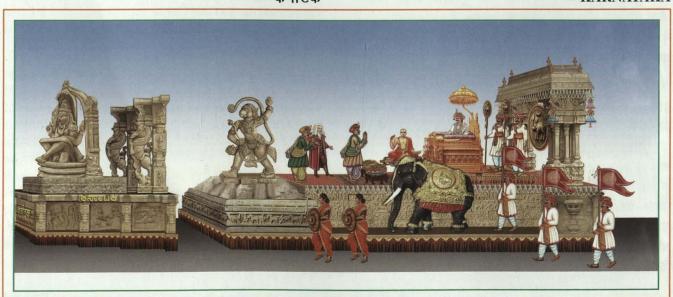
VIJAYANAGARA: THE CITY OF VICTORY

Karnataka state presents its tableau on the theme – "Vijayanagara: The City of Victory". Vijayanagara was the Capital City of the Vijaynagar Empire that flourished on the banks of Tungabhadra River in the Deccan Plateau region in Karnataka. Incidentally, the Government of Karnataka has notified in December 2020, Vijayanagara as the 31st District of the State, carved out of Ballari District.

The Empire was established in 1336 by two brothers Harihara-I and Bukka Raya-I of Sangama Dynasty. At its peak, it had subjugated most of South India's ruling families and Sultans of Deccan region. The Empire's legacy includes many monuments across South India, with the best-known among them being the Hampi, now in ruins, which has been designated as a World Heritage Site by the United Nations Educational, Scientific and Cultural Organisation (UNESCO). The chronicles of European and Persian travellers, as well as Archaeological Excavations have revealed the Vijayanagara Empire's power and wealth. By 1500 C E, Hampi-Vijayangara was the World's Second largest medieval era city (after Beijing) and arguably India's richest at that time, attracting traders from Persia and Portugal.

The front portion and fore part of the rear portion showcase the star attractions of Hampi- the Ugra Narasimha and Anjanadri Hills, said to be the birth place of Lord Hanuman. Thereafter, Coronation Ceremony of Sri Krishnadevaraya, the best known Emperor of Vijayanagara Empire in 1509 is exhibited. Mural visuals from Hazararama Temple are also shown on the tableau.

- KARNATAKA





केरल का कॉयर

केरल की झाँकी की विषय वस्तु है "केरल का काँयर"। कॉयर केरल का सुनहरा फाइबर है। केरल या केरलम शब्द का अर्थ है- नारियल के पेड़ों की भूमि। केरल में संस्कृति से लेकर व्यंजन तक सब कुछ नारियल के आसपास विकसित हुआ है। इसलिए यह एक रूपक है जो राज्य के सांस्कृतिक और सामाजिक तालमेल को दर्शाता है। देश के कुल नारियल उत्पादन का 61% और कुल कॉयर उत्पादन का 85% केरल में होता है। इस झाँकी 'केरल का कॉयर' में मुख्यतः जैव-अपघट्य सामग्री का प्रयोग किया गया है। कॉयर उत्पादन महिला द्वारा सशक्त स्थानीय लघु उद्योग है। यह झाँकी अग्र भाग द्वारा केरल की स्थानीय महिलाओं द्वारा मौलिक मशीन रह का प्रयोग करते हुए कॉयर निर्माण के परंपरगत ज्ञान को दर्शाती है। झाँकी का अधिकांश हिस्सा रेत की सतह पर गढा गया है, जिसे अक्सर समुद्र के करीब पानी वाले क्षेत्र में देखा जाता है। इसके दोनों सिरों को मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए उपयोग किए जाने वाले जियो-टेक्सटाइल कॉयर भुवस्त्र से ढका गया है। स्थानीय लोगों की जीवटता को अभिव्यक्त करने वाले लोक अनुष्ठान थीयम का प्रदर्शन किया जा रहा है। थीयम, जिसका अर्थ है भगवान, में नारियल के पेड़ की कोमल पत्तियों का उपयोग सजावट और पोशाक के लिए और आत्म सुरक्षा के लिए किया जाता है क्योंकि अनुष्ठान में अग्नि का उपयोग किया जाता है। थीयम का प्रदर्शन चेंडा वाद्ययंत्र के साथ किया जाता है जिसे भू तत्वों के रूप में प्रदर्शित किया गया है। पृष्ठ भाग में रेत के प्लेटफॉर्म पर दो नवपल्लवित नारियल और बगल में नारियल का फाइबर निकालने में संलग्न महिलाएं दिखाई दे रही हैं। पीछे की ओर नारियल के पेड़ और किनारों पर पके हुए नारियल के गुच्छे दिखाई दे रहे हैं। पीछे की तरफ मूल बैक वाटर नेट या चाइना नेट का मॉडल दिखाई दे रहा है। इसे चीनी खोजकर्ता झेंग हे द्वारा 15वीं शताब्दी

में केरल तट पर पेश किया गया था।

COIR OF KERALA

The theme of the tableau of Kerala is 'Coir of Kerala'.

Coir is golden fiber for Kerala. The word Kerala or Keralam means land of coconut trees. Everything from culture to dishes in Kerala evolve around coconut. Coir is a metaphor that reflects cultural and social harmony. Kerala accounts for 61% of total coconut production and 85% of total coir products in the country. The tableau 'Coir of Kerala' has been constructed mostly with biodegradable materials. Coir making is a women empowered industry.

The tableau at front portion showcases Kerala's traditional knowledge of local women in coir making using original coir making machine called ratt. The major part of tableau is fabricated on a sand bed often seen in back water area closer to sea. It is covered at both ends with coir bhoovastra, a geo textile used to prevent soil erosion. Theyyam, a ritual folk performance reflecting the survival spirit of local people is being performed. In theyyam which means God, tender leaves of coconut tree are used for decoration and costume and for self protection as fire is used in ritual performances. Theyyam is performed with support of percussion chenda which is being showcased as ground elements. In the rear portion, two tender coconuts on sand platform and women on sides engaged in extracting coconut fiber are seen. Coconut trees at the rear and bunches of ripened coconuts in an array on side panels are seen. Miniature of the original back water shore net or China net is seen at the rear. It was introduced in Kerala coast in 15th century by Chinese explorer Zheng He.

- केरल

- KERALA



लेपाक्षी-वास्तु अखंड चट्टान चमत्कार

आंध्र प्रदेश की झाँकी का विषय है—''लेपाक्षी—वास्तु अखंड चट्टान चमत्कार''।

लेपाक्षी— आंध्र प्रदेश के वास्तुशिल्प भव्यता के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है। यह मंदिर वास्तुकला सन 1583 के समय का है और विजयनगर शैली में विजयनगर किंग्स के भाइयों, विरुपन्ना और वीरन्ना दरबारियों द्वारा बनाया गया था।

झाँकी समृद्ध अखंड रॉक वास्तुकला लेपाक्षी मंदिर का प्रदर्शन करती है। इसके अलावा, मंदिर की वास्तुकला भी शानदार अखंड चट्टान नंदी की विशाल संरचना को दर्शाती है, जिसकी लंबाई 27 फीट और ऊंचाई 15 फीट है, जो भारत की सबसे बड़ी अखंड नंदी संरचना है। रिकॉर्ड आकार के अलावा, पूरी तरह से आनुपातिक शरीर, बारीक नक्काशीदार आभूषण और चिकनी आकृति इसकी भव्यता को दर्शाती है। इसके पीछे मंदिर के मेहराब और लेपाक्षी मंदिर के स्तंभ की वास्तुकला का अद्भूत प्रदर्शन किया गया है। मंदिर, एक शोभा के रूप में, दो बाडों से घिरा हुआ है। झाँकी मंदिर के बाहरी परिक्षेत्र को भी दर्शाती है, जहाँ चट्टान के साथ पत्थर में तराशे हुए श्री गणेशजी की बड़ी प्रतिमा है। उसके लंबवत तीन कुंडली लिये हुए सात मुख वाला एक विशाल नाग है। यह काले ग्रेनाइट शिव लिंगम के ऊपर एक छत्र बनाता है। साथ ही छत पर वीरभद्र के भित्ति चित्र और शिव पार्वती कल्याणम के बेहतरीन नमुनों को भी दर्शाया गया है। झाँकी पर, "वीरनाट्यम" नामक पारंपरिक संगीत उन्मुख कला रूप प्रदर्शित किया जा रहा है।

–आंध्र प्रदेश

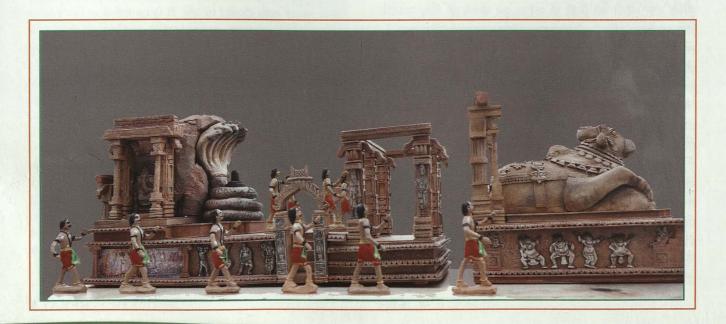
LEPAKSHI -ARCHITECTURAL MONOLITHIC MARVEL

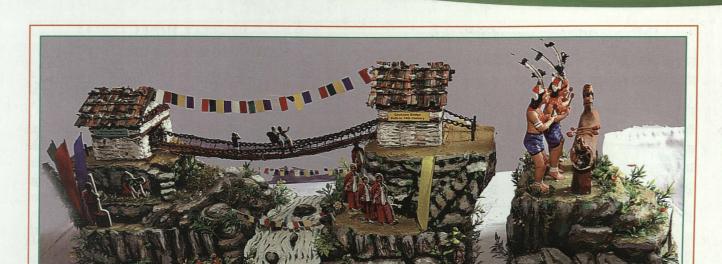
Andhra Pradesh presents its tableau on the theme 'Lepakshi - Architectural Monolithic Marvel'.

Lepakshi- is one of the fine examples of Architectural Grandeur of Andhra Pradesh. This temple architecture dates back to year 1583 and was built by the brothers, Virupanna and Veeranna courtiers of Vijayanagara Kings in Vijayanagara style.

The tableau showcases the rich monolithic rock architecture Lepakshi temple. Besides, the temple architecture on the tableau also showcases the spectacular monolithic rock Nandi which is a colossal structure with 27ft in length and 15ft in height, reputedly India's biggest monolithic Nandi. Besides the record size, the perfectly proportioned body, finely-carved ornaments and smooth contours highlight to its grandeur. At the rear portion exhibited the architectural marvel of the temple arches and pillar architecture of Lepakshi temple. The temple, as an edifice, is encircled by two enclosures. It also showcases the temples' outer enclosure, a mammoth Ganesha hewn in stone and leaning against a rock. Perpendicular to it is a massive Naga with three coils and seven hoods. It forms a sheltering canopy over black granite Shiva lingam. The tableau also depicts the finest specimens of mural fresco of Veerabhadra on the ceiling and Shiva Parvathi Kalyanam. On the tableau, traditional music oriented art form called "Veeranatyam" is being performed.

- ANDHRA PRADESH





ईस्ट मीट्स वेस्ट

झाँकी का शीर्षक 'ईस्ट मीट्स वेस्ट' इन क्षेत्रों में निवास करने वाली दो जनजातियों को दर्शाता है। वांग्चो, जो जीववाद में विश्वास करते हैं, लोंगडिंग जिले के पटकाई पहाड़ियों में निवास करते हैं तथा बौद्ध धर्म का पालन करने वाले मोनपा तवांग में रहते हैं।

अरुणाचल प्रदेश पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा राज्य है, जिसमें 26 से अधिक जनजातियाँ और उप—जनजातियाँ निवास करती हैं। राज्य के पूर्वी भाग में लोंगडिंग से लेकर राज्य के पश्चिमी भाग में तवांग तक, सभी जनजातियों की अपनी अलग पहचान, संस्कृति और रीति—रिवाज हैं।

झाँकी के अग्र भाग में वांग्चो जनजाति, जो लोंगडिंग के पूर्वी हिस्से में निवास करती है, के संगीत वाद्ययंत्र 'खाम' को दर्शाता है। दश्मन के हमले की स्थिति में अलार्म के संकेत भेजने के लिए खाम को पीटा जाता है या किसी अन्य महत्वपूर्ण अवसर पर भी इसे पीटा जाता है और इसे 'पा' नामक पारंपरिक डोरमेट्री में रखा जाता है। पा एक ऐसी संस्था की तरह है जो गांव और उसकी परंपरा की रक्षा करती है। यौवन प्राप्त करने वाले सभी पुरुष गाँव के पा में से एक के अनिवार्य सदस्य होते हैं। पा गाँव के गार्ड-हाउस के रूप में कार्य करता है और इसलिए सबसे बड़ा म्यूजिकल लॉग ड्रम, 'खाम' यहाँ रखा जाता है। जब खाम के लिये कोई पेड काटा जाता है, इसे पा में ले जाते समय वांग्चो गीतों के माध्यम से वृक्षों, जानवरों और पक्षियों से क्षमा मांगते हैं। झाँकी का पिछला हिस्सा राज्य के पश्चिमी भाग, तवांग के आश्चर्य को दर्शाता है। यहां चाकदम आयरन चेन ब्रिज दिखाया गया है जिसका निर्माण लामा चौथम वांगपो ने 14वीं शताब्दी में किया था। शुद्ध लोहे से बना पुल तवांग में चाकगम ग्राम और मुक्टो के बीच तवांग चू नदी पर बनाया गया है। बेहतरीन धातु विज्ञान से युक्त यह अनूठा पुल जंग से मुक्त है और इसमें जोड़ों के कोई निशान नहीं हैं।

- अरुणाचल प्रदेश

EAST MEETS WEST

The tableau of the Arunachal Pradesh with the theme 'East Meets West' showcases the two tribes inhabiting these regions. While the Wanchos, who believe in animism, reside in the Patkai hills of Longding district, the Monpas, who follow Buddhism, reside in Tawang.

Arunachal Pradesh is the biggest state in the Northeast, with more than 26 tribes and sub tribes inhabiting the region. From Longding in easternmost part of the state to Tawang in the westernmost part of the state, all the tribes have their distinct identity, culture and ritual.

The front part of the tableau showcases the musical instrument 'Kham' of Wancho tribe, who reside in the easternmost state of Longding. Kham is beaten to send signals of alarm in the event of enemy attack or any other important occasion and is housed at the traditional dormitories called 'Paa'. Paa is more like an institution that protects the village and its tradition. All males attaining puberty are compulsory members of one of the Paa of the village. Paa serves as guard house of the village and hence the largest musical log drum, the 'Kham' is placed here. When a tree is cut down for Kham, the Wanchos seek pardon from trees, animals & brids through songs while draging it to the Paa. The rear part of the tableau exhibits the wonder of the western most part of the state, Tawang. Shown here is the Chakzam Iron Chain Bridge that was constructed in 14th Century A.D. by Lama Chatham Wangpo. The bridge made of pure iron is erected over the Tawang Chu River between Chakzam Village and Mukto in Tawang. This unique bridge with finest metallurgy is corrosion free and has no signs of joints in the ring.

- ARUNACHAL PRADESH

डिजिटल इण्डिया, आत्मनिर्भर भारत

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार की झाँकी डिजिटल इंडिया आत्मनिर्भर भारत के विषय पर आधारित है।

झाँकी के अग्र भाग पर AI रोबोट का 3D मॉडल दर्शाया गया है जो देश में हो रही डिजिटल क्राँति को प्रदर्शित करता है। AI रोबोट के कन्धों पर विशाल पहिए बने हुए हैं जो आत्मनिर्भर भारत के आगे बढ़ते रहने का प्रतीक है। रोबोट का ढाँचा भारत में डिजाइन किये गए दुनिया के सर्व शक्तिशाली—परम सुपर कंप्यूटर द्वारा शक्ति प्रदत्त है।

झाँकी के पृष्ठ भाग को इस तरह से डिजाइन किया गया है जैसे कि वह AI रोबोट के द्वारा संचालित है। ट्रॉली के दोनों तरफ प्रगति सूचक LED Walls लगी हैं जो कि डिजिटल प्रगति को प्रदर्शित कर रही हैं। पृष्ठ भाग में सबसे आगे एक किसान मोबाइल फोन लिए है जो खेती से सम्बंधित जानकारी ले रहा है तथा AI द्वारा संचालित ड्रोन की मदद से सटीक और आधुनिक खेती को सुगम बना रहा है। इसके पीछे एक सार्वजनिक सेवा केंद्र (CSC) और प्रधानमंत्री की इ-छात्रवृति योजना को प्रदर्शित किया गया है। मानव सदृश प्रतिमाओं के साथ घूमते हुए मंच पर एक विशाल सेलफोन के माध्यम से भीम यूपीआई, मोबाइल गवर्नेस और मोबाइल मैन्यूफैक्चरिंग को दर्शाने वाले आधुनिक सर्किट प्रदर्शित किए गए हैं। मंच के शिखर पर एक घूमता हुआ डिजिटल चक्र है जिस पर MEITY की प्रमुख सेवाओं को दर्शाया गया है। इनके पीछे, दो प्रमुख सेवाओं को प्रदर्शित किया है जिनका कोविड-19 में सबसे ज्यादा प्रयोग किया गया है- इ-विद्या एवं इ-ऑफिस जो कि लैपटॉप के माध्यम से दर्शाया गया है। झाँकी के पश्च भाग में, एक आधुनिक रोबोटिक भुजा में. 84 इंच का डिस्प्ले है जिसपर MEITY से सम्बंधित सेवाओं पर वीडियो चल रहे हैं जो दर्शाता है कि डिजिटल इंडिया अभियान, भारत के विकास में, डिजिटल क्राँति की एक नयी उमंग ला रहा है। झाँकी के अंतिम भाग में, कोविड-19 महामारी का नायक रहा आरोग्य सेतू ऐप दर्शाया गया है।

- इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

DIGITAL INDIA, AATMA-NIRBHAR BHARAT

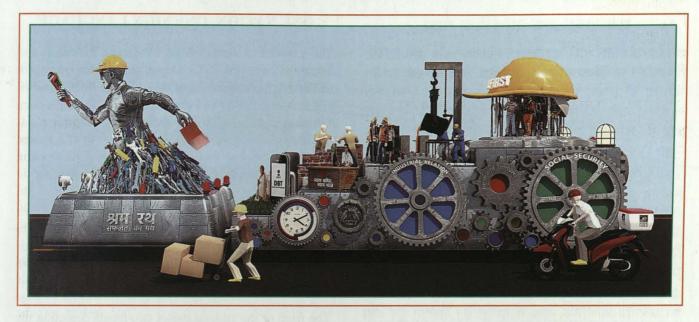
The Ministry of Electronics & Information Technology's (MEITY) tableau is inspired from the theme: Digital India, Aatma-Nirbhar Bharat.

The front section of MEITY's dynamic 3-dimensional tableau is pioneered by a 3D model of an AI Robot depicting digital revolution steered by the Digital India programme. The shoulders of the AI Robot form gigantic wheels that depict the energetic and spirited movement of a self-reliant India. The body of the robot is powered by one of the most powerful supercomputers in the world, Param Supercomputer, designed in India.

The rear section is designed as if it is resting on a chassis powered by the AI robot in front, with LED walls displaying dynamic content, on both sides of the trolley, showcasing the digital progress of the country. At the first in the rear portion, a farmer holding a mobile phone is showcased as controlling an AI powered drone for modern scientific precision farming. Next to this, a CSC and PM's e-scholarship programme are depicted. On a revolving platform, BHIM UPI, e-Sanjeevani, mobile governance and a modern day circuit portraying mobile manufacturing are shown through larger-than-life cell phone screens and humanoid figurines. The head of the revolving platform holds a rotating wheel, highlighting key digital services by MEITY. At the back of this section, 2 services, significant during the COVID-19 pandemic, e-Vidya and e-Office, are shown through laptops. At the end, a modern robotic arm holds an 84-inch display, playing videos of services provided by MEITY. In the tail end, our nation's hero for the COVID-19 pandemic, Aarogya Setu App stands tall.

- MINISTRY OF ELECTRONICS & INFORMATION TECHNOLOGY





श्रम सुधार

गणतंत्र दिवस 2021 के समारोह पर श्रम एवं रोजगार मंत्रालय श्रम सुधार की विषयवस्तु पर अपनी झाँकी प्रस्तुत कर रहा है—'मेहनत को सम्मान, अधिकार एक समान'।

यह झाँकी दर्शाती है कि कैसे हाल ही अमल में लाए गये कोड्स ने संगठित और असंगठित श्रमिकों के जीवन को एक नई दिशा दी है। श्रमिकों का सुखद अवस्था और सुरक्षा पर केंद्रित उत्सव रचना के मूल में है।

झाँकी के अगले भाग में विश्वास से भरे सशक्त श्रमिक की एक बड़ी प्रतिमा है, जो हाथ में टूल लिए आगे की ओर बढ़ रहा है। श्रमिक ने सर पर एक पीला सेफ्टी हेलमेट पहना हुआ है जो श्रम सुधार के अंतर्गत उपलब्ध सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सुरक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा को दर्शाता है। झाँकी के बीच अलग-अलग तरह के काम करते श्रमिक और कामगार हैं। श्रमिकों को मिल रही स्वास्थ्य और आर्थिक सेवा को दर्शाने हेतू झाँकी में एक बड़े से मोबाइल में DBT (Direct Benefit Transfer) और एक मेडिकल किट भी है जिस पर लिखा है 'स्वस्थ श्रमिक, स्वस्थ भारत'। यह श्रमिकों को उपलब्ध करायी गयी चिकित्सा और आर्थिक सुरक्षा को दर्शाती है। झाँकी के पिछले भाग में कई श्रमिक एक बड़े, पीले हेलमेट की सुरक्षा में खड़े हैं, जहाँ 'सेफ्टी फर्स्ट' लिखा है। झाँकी के पहिये सदैव उपलब्ध सामाजिक सुरक्षा और स्वच्छ कार्य वातावरण का संदेश लेकर चल रहे हैं। चलती हुई झाँकी के साथ कई कलाकार डिलीवरी बॉय, कार्गो कैरियर आदि की वेश-भूषा में प्रस्तृति करते हुए नज़र आ रहे हैं।

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय

LABOUR REFORMS

The 2021 Republic day celebration theme of the tableau of Ministry of Labour & Employment is Labour Reforms-मेहनत को सम्मान, अधिकार एक समान' which translates to 'respect for hard work & equal rights for all'.

The tableau art portrays the transformation that will come into the life of organised and unorganised workers after the-implementation of the recent labour codes. The design thought is a celebration of workers all-round well-being and security.

The front of the tableau has a huge structure of a very confident and empowered worker-holding a tool and leading the way. A yellow safety cap on his head suggests social security, wage security and health security provided under labour reforms. The middle shows glimpse of workers from various industries along with a mobile app showing DBT (Direct Benefit Transfer) facility and a medical aid suggestion which reads, "SwasthShramik, Swasth Bharat" which means Healthy Worker. This is to highlight the medical and financial protection being given to them. The rear part shows different workers finding shelter in a big yellow helmet where 'Safety first' is written. The wheels carry messages of social security and clean work environment that is available round the clock. Alongside the tableau. Platform workers and artists performing as delivery boy, cargo carrier etc are seen along with the tableau.

- MINISTRY OF LABOUR & EMPLOYMENT

एक राष्ट्र, एक सांकेतिक भाषा

भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र (ISLRTC), विव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की झाँकी, 'भारतीय सांकेतिक भाषा— एक भारत, एक सांकेतिक भाषा' की विषय वस्तु को प्रस्तुत करती है। एक ऐसे राष्ट्र में जहां बोली जाने वाली भाषाओं में विविधता है, वहीं यह विषय भारतीय सांकेतिक भाषा के एकीकृत स्वरूप पर प्रकाश डालता है।

भारतीय सांकेतिक भाषा श्रवण बाधितों की भाषा है। झाँकी का उद्देश्य भारतीय सांकेतिक भाषा के बारे में जागरूकता बढ़ाना और भारतीय सांकेतिक भाषा के माध्यम से श्रवण बाधितों के लिए एक अवरोध मुक्त वातावरण बनाने की प्रतिबद्धता को उजागर करना है।

झाँकी के प्रथम भाग में, दो हाथ भारत के राष्ट्रीय पक्षी 'मोर' को भारतीय सांकेतिक भाषा में दर्शाते हैं। लहराते हुए हाथ मोर के पंख को दर्शाते हैं। मध्य भाग में एक माँ अपनी श्रवण बाधित बच्ची को भारतीय सांकेतिक भाषा में पढ़ा रही है, जो शीघ्र हस्तक्षेपण के महत्व को उजागर करता है। श्रवण बाधित और सुनने वाले छात्र भारतीय सांकेतिक भाषा में बातचीत करते देखे जा सकते हैं, जो यह दर्शाता है कि यह भाषा सुनने में अक्षम लोगों के लिए एक सुलभ और समकक्ष वातावरण बनाने का माध्यम हो सकती है। भारतीय सांकेतिक भाषा के विभिन्न संकेत भी दर्शाए गए हैं। झाँकी के पार्श्व भाग में रंगीन प्रतिमाओं के माध्यम से भारतीय सांकेतिक भाषा में झाँकी की विषय वस्तु को दर्शाया गया है। झाँकी के अंतिम भाग में एक शिक्षिका छात्र को भारतीय सांकेतिक भाषा पढ़ा रही है, और 'एकता' के महत्व को समझा रही है।

 दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (आईएसएलआरटीसी)

ONE NATION, ONE SIGN LANGUAGE

The Tableau of Indian Sign Language Research and Training Centre (ISLRTC), Department of Empowerment of Persons with Disabilities, Ministry of Social Justice and Empowerment showcases the theme of Indian Sign Language- 'One Nation, One Sign Language'. It highlights the unifying nature of Indian Sign Language in a nation where there is great diversity in spoken languages.

Indian Sign Language (ISL) is the language of persons with hearing disabilities. The aim of the tableau is to raise awareness and highlight the commitment towards creating a barrier-free environment for persons with hearing disabilities through ISL.

The front of the tableau shows two hands depicting the ISL sign for 'Peacock', the national bird of India. Wavering hands symbolize its feathers. The middle part shows a mother teaching her hearing impaired child Sign Language, highlighting the importance of its early exposure. Students with hearing disabilities are conversing with hearing students in ISL, which shows how a barrier-free and inclusive environment is possible through ISL. Various hand signs of ISL are also seen. Colourful hand sculptures on the side depict the theme in ISL. The rear portion shows a teacher imparting learning of Indian Sign Language and explaining the importance of 'Unity' to a student.

- DEPARTMENT OF EMPOWERMENT OF PERSONS WITH DISABILITIES (ISLRTC)





ओजो भारत, तेजो भारत : स्वस्थ भारत – सक्रिय भारत

आयुष मंत्रालय अपनी झाँकी "ओजो भारत, तेजो भारत : स्वस्थ भारत सक्रिय भारत" विषय वस्तु पर प्रस्तुत करता है। आयुष शब्द हमारी तंदुरुस्ती का पर्याय है। आज, इसने प्राकृतिक रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने से संबंधित अनुसंधान और विकास को प्रमाणित किया है जिससे कोविड—19 जैसे संक्रामक रोगों के विरुद्ध रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद मिली है। माननीय प्रधान मंत्री जी ने रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में आयुष काढ़ा और च्यवनप्राश के महत्व को रेखांकित किया है। रसोई में प्रयोग होने वाले अनेक मसालों में भी प्रतिरक्षा नियंत्रक और एंटी—वायरल गूण विद्यमान होते हैं।

झाँकी में एक खूबसूरत छोटी—पहाड़ी पर आचार्य चरक की प्रतिमा को अलग—अलग जड़ी—बूटियों और औषधीय झाड़ियों एवं पादपों को ओखल—मूसल में पीसकर अद्वितीय नुस्खा बनाते हुए दर्शाया गया है। इस झाँकी के पृष्ठ भाग में लौंग, अदरक, इलायची, आंवला, दालचीनी, हल्दी आदि जैसे औषधीय गुणों वाले विभिन्न प्राकृतिक उत्पादों को दर्शाया गया है। गिलोय की एक बड़ी बेल झाँकी के चारों ओर बांधी गई है। झाँकी के पृष्ठ भाग के अगले हिस्से में 'आयुष काढ़ा' बनाते दिखाया गया है। झाँकी के बीच में एक 'अशोक वृक्ष' है जिसके नीचे बैठकर एक 'वैद्य' किसानों को औषधीय फसल उगाने के फायदे के बारे में बता रहे हैं।

झाँकी के पिछले छोर पर प्रयोगशाला में काम कर रहे एक वैज्ञानिक को दर्शाया गया है जिसके चारों ओर अत्याधुनिक उपकरण मौजूद हैं और वह प्रयोगशाला में भारतीय विधि से विश्व स्तरीय औषधियों के अनुसंधान एवं विकास में लीन है। समेकित रूप में, यह झाँकी प्राचीन ग्रंथों से लेकर आचार्य चरक से शुरू करते हुए आधुनिक युग के वैज्ञानिकों द्वारा शोध यात्रा को दर्शाती है और आगे भविष्य में, स्वास्थ्य एवं तंदुरुस्ती के पथ—प्रदर्शक के रूप में आयुष की अनुशंसा करती है। — आयुष मंत्रालय

OJO BHARAT, TEJO BHARAT: IMMUNE INDIA-ACTIVE INDIA

Ministry of AYUSH presents its tableau on the theme "Ojo Bharat, Tejo Bharat:Immune India-Active India". The word AYUSH is synonym with wellness. Today it has established research and production of natural immunity enhancers, which has helped in building resistance against communicable diseases like COVID-19. The Hon'ble Prime Minister underlined the importance of AYUSH Kadha and Chywanprash in boosting the immunity. Several spices used in the kitchen also have immunomodulatory and anti-viral activity.

The tableau depicts a statue of Acharya Charak at the front creating a unique recipe with mortar and pestle sitting over a landscaped hillock with various roots and medicinal shrubs and plants. The rear portion showcases various natural produce with household recall with medicinal properties like Clove, Ginger, Cardamom, Amla, Cinnamon, Turmeric etc. A large twig of Giloy binds all around the tableau. The front part of the rear position showcases making of 'Ayush Kadha'. The Centre of the Tableau is a 'Ashoka Tree' with 'Vaidya' advising the farmers about the benefits of growing medicinal crops.

The rear end of the tableau showcases a scientist working in the laboratory on research and development of medicines surrounded with his state of the art equipment committed to make Indian way of medicine globally accepted. Overall the tableau showcases the journey from ancient scriptures from Acharya Charak to the research of the modern age scientist, and further recommends AYUSH as the pathway to health in the future.

- MINISTRY OF AYUSH

लौह पुरुष एवं फौलादी बल

सीआरपीएफ की झाँकी "सेवा और निष्ठा" के अपने आदर्श वाक्य के अनुरूप अपनी समृद्ध विरासत, शौर्य एवं मानवीय चेहरे को दर्शाती है। झाँकी का विषय—वस्तु —"लौहपुरुष जनित फौलादी बल, सी.आर.पी.एफ. योद्धा—देश का संबल" पर आधारित है।

1949 में सरदार पटेल द्वारा संस्थापित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, आज देश का विशालतम केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल है तथा आंतरिक सुरक्षा हेतु अग्रणी बल होने के अतिरिक्त, महिला संवेदी पुलिसिंग की विशेषता के साथ लोक व्यवस्था संधारण हेतु कार्यरत रहता है। यह बल देश के अशांत क्षेत्रों, जिसमें जम्मू—कश्मीर और वामपंथी उग्रवाद प्रभावित (एल.डब्ल्यू.ई.) क्षेत्र प्रमुख हैं, में उग्रवाद—विरोधी अभियान चलाने एवं आंतरिक सुरक्षा परिदृश्य की रक्षा हेतु तैनात है।

झाँकी का अग्र भाग बल के तीन विशिष्ट विंग—कोबरा, कश्मीर घाटी की क्विक एक्शन टीम (क्यू, ए.टी.) एवं रेपिड ऐक्शन फोर्स (आर.ए.एफ.) के जवानों को दर्शाता है। मध्य भाग घाटी के क्यू, ए.टी. कमांडो द्वारा संचालित अत्याधुनिक स्वॉटमार्कस्मैन गाड़ी एवं बल की मानवीय प्रकृति को दर्शाते हैं जिसकी परिणित जनोन्मुखी गतिविधियों में होती है। यहाँ श्रीनगर की डल झील में सीआरपीएफ वाटर—विंग द्वारा गश्त एवं कोबरा कमांडों द्वारा जंगल युद्ध—पद्धित में चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों का निडरतापूर्वक सामना करना भी दर्शाया गया है। झाँकी के पिछले भाग में बल के संस्थापक सरदार पटेल, जिन्होंने इस फौलादी बल की परिकल्पना की. की प्रतिमा विद्यमान है।

- केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

THE IRON MAN & THE IRON FORCE

CRPF Tableau depicts the rich legacy, valour and humane face of the Force in line with its motto of "Service & Integrity". The theme of the Tableau is based on - "The Iron Man created the Iron Force, CRPF Warriors - the nation's recourse".

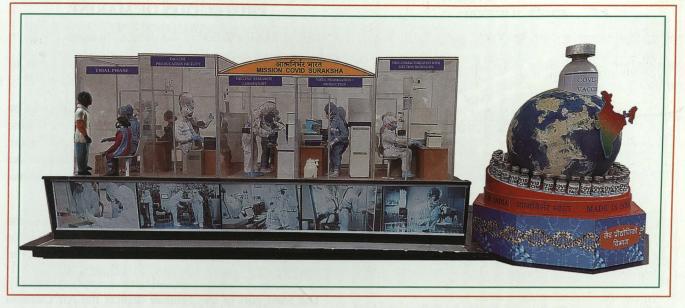
Founded as the Central Reserve Police Force in 1949 by Sardar Patel, CRPF is today the largest Central Armed Police Force in the country and the lead force for maintaining Internal Security, besides being tasked for maintaining public order along with gender-sensitive policing. It is mainly deployed in disturbed theatres including Jammu & Kashmir and Left-Wing Extremism (LWE) affected areas to conduct counter-insurgency operations and preserve the internal security grid.

The front portion of the Tableau depicts Jawans from CRPF's specialised wings- CoBRA, Kashmir Valley Quick Action Team (QAT) and Rapid Action Force (RAF). The middle portion shows the state-of-the-art SWAT Marksman Vehicle manned by Valley QAT Commandos and the humanitarian ethos of the Force culminating in people-friendly interface. Also illustrated are the CRPF Water-Wing patrolling the Dal Lake in Srinagar and CoBRA Commandos fearlessly negotiating challenging terrain during Jungle Warfare. The rear portion displays a statue of Sardar Patel, the founding father of CRPF, who conceptualised it is an "Iron Force".

- CENTRAL RESERVE POLICE FORCE







कोविड के विरुद्ध भारत का संघर्ष

बायोटेक्नोलॉजी विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय की झाँकी बायोटेक्नोलॉजी क्षेत्र के सामर्थ्य को दर्शा रही है जिसने कोविड—19 के लिए वैक्सीन और नैदानिक विकास के लिए तेजी से प्रतिक्रिया की है। देश में वैक्सीन पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए भारत सरकार द्वारा 'मिशन कोविड सुरक्षा, भारतीय कोविड—19 वैक्सीन विकास मिशन' की शुरूआत की गई। बायोटेक्नोलॉजी विभाग के नेतृत्व में 900 करोड़ रूपये के प्रावधान के साथ तीसरे प्रोत्साहन पैकेज, 'आत्म निर्भर भारत अभियान 3.0' के रूप में इस मिशन की घोषणा की गई थी।

कोविड—19 महामारी के दौरान, बायोटेक्नोलॉजी विभाग और उसके सार्वजिनक क्षेत्र के उपक्रम जैवप्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बीआईआरएसी) ने अन्य वैज्ञानिक विभागों—डीएसटी, सीएसआईआर और आईसीएमआर के साथ मिलकर शीघ्रता से कार्य किया और स्वदेशी वैक्सीन एवं नैदानिक अनुसंधान तथा विकास को सुदृढ़ बनाने में संयुक्त प्रयास किए और वैश्विक नेतृत्वों के साथ भी सहयोग किया। जिन वैक्सीन का सफलतापूर्वक उत्पादन किया जा रहा है, उनकी वैश्विक स्तर पर पहुंच सुनिश्चित करने के लिए भारत डब्ल्यूएचओ, सीईपीआई और जीएवीआई के समन्वित प्रयासों में सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है।

झाँकी का अग्रिम भाग भारत की आत्मिनर्भर भारत के लिए मजबूती और वैक्सीन विकास एवं व्यापक स्तर पर उत्पादन के लिए वैश्विक उत्पादन हब बनने के लिए हमारी स्थिति को दर्शा रहा है। झाँकी के पिछले हिस्से में वैक्सीन अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशालाएं एवं मानव—रहित और मानव—सहित नैदानिक परीक्षणों को दर्शाया गया है। बाजू वाले दोनों हिस्से नवीन वैक्सीन के विकास के लिए बायोटेक्नोलॉजी संस्थानों और उद्योगों में उपलब्ध क्षमता और अवसंरचना दर्शात हैं।

–बायोटेक्नोलॉजी विभाग

INDIA FIGHTS COVID

The tableau of the Department of Biotechnology, Ministry of Science & Technology is showing the strength of biotechnology sector which has responded rapidly for the development of vaccine and diagnostics for COVID-19. To strengthen the Vaccine ecosystem in the country 'Mission COVID Suraksha, the Indian COVID-19 Vaccine Development Mission', has been launched by the Government of India (GOI). The Mission being led by the Department of Biotechnology, was announced as part of the third stimulus package, 'Aatmanirbhar Bharat Abhiyaan 3.0', with a provision of Rs. 900 Cr.

During the COVID-19 pandemic, the Department of Biotechnology and its Public Sector Enterprise, Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC) along with other Scientific Departments- DST, CSIR and ICMR responded rapidly and made concerted efforts in strengthening indigenous vaccine and diagnostics research and development and also collaborated with global leaders. India is actively engaged in the coordinated efforts by WHO, CEPI and GAVI to ensure global access to the vaccines which are successfully being produced.

The front part of the Tableau is showing India's strength for an Atma Nirbhar Bharat and also how well we are positioned to be a Global Manufacturing Hub for vaccine development and large-scale manufacturing. The rear portion of the Tableau shows the Vaccine Research and Development laboratories and non-human and human clinical trials. Side panels display the capacity and infrastructure available with the Biotechnology Institutions and Industries for development of innovative vaccines.

- DEPARTMENT OF BIOTECHNOLOGY

समुद्री पर्यावरण का संरक्षण

भारतीय तटरक्षक की गणतंत्र दिवस झाँकी का विषय है ''समुद्री पर्यावरण का संरक्षण'।

समुद्री पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर समुद्री प्रदूषण द्वारा होने वाले बुरे प्रभावों को ध्यान में रखते हुए, रक्षा मंत्रालय के अधीन भारत संघ का सशस्त्र बल भारतीय तटरक्षक समुद्री पर्यावरण के संरक्षण के लिए उपयुक्त कार्रवाई करता है।

भारतीय तटरक्षक की झाँकी कई भारतीय तटरक्षक पोतों में से दो को प्रदर्शित करती है जो विशाल समुद्री क्षेत्रों में भारत के हित की रक्षार्थ बहुमुखी शांतिकालीन भूमिका निभाने में सक्षम हैं।

झाँकी का अग्र भाग किसी आपात स्थिति में प्रतिक्रियात्मक कार्य में लगे वायु उपधान वाहन (एसीवी) या होवरक्राफ्ट को दर्शाता है। झाँकी के पीछे के हिस्से में तेल रिसाव और अन्य समुद्री प्रदूषण के प्रतिक्रियात्मक कार्य में लगे देश में निर्मित प्रदूषण नियंत्रण पोत (पीसीवी) को दर्शाया गया है। पीसीवी 201 प्रसिद्ध "समुद्र प्रहरी" है, जिसने कई समुद्री अग्निशमन और तेल रिसाव प्रतिक्रिया अभियानों में भाग लिया। इस झाँकी में, पीसीवी विषम समुद्री परिस्थिति में साइड स्वीपिंग उपकरणों से प्रदूषण प्रतिक्रिया अभियान कर रहा है जिसमें एक उन्नत लघु हेलिकाप्टर तेल फैलाव प्रतिक्रियात्मक कार्य में एक अंडरस्लंग ऑयल स्पिल डिस्पर्सेंट स्प्रे बाल्टी के साथ सहायता कर रहा है।

– भारतीय तटरक्षक बल

PROTECTION OF MARINE ENVIRONMENT

"Protection of Marine Environment" is the theme of Republic Day Tableau of Indian Coast Guard.

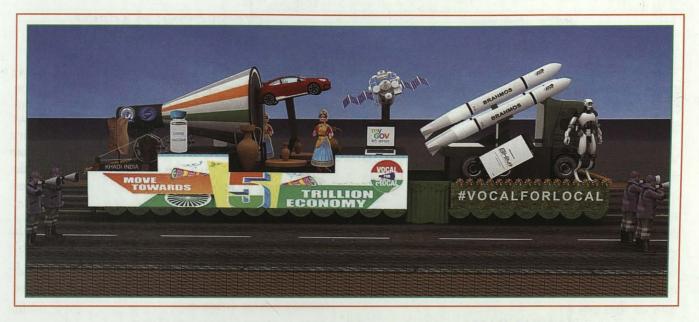
The marine environment is a vital resource for life on Earth. Mindful of the deleterious effect that the marine pollution causes to the marine ecosystem, the Indian Coast Guard, the Armed Force of the Union of India under the Ministry of Defence, takes suitable actions to protect the marine environment.

The tableau of Indian Coast Guard showcases two of the several of Indian Coast Guard Vessels that are capable of undertaking multifarious peacetime roles at sea to protect India's interest in her vast sea areas.

The front part of the Tableau depicts the Air Cushion Vehicle (ACV) or Hovercraft sliding into sea to respond to an emergent situation. The rear part of the Tableau depicts Pollution Control Vessel (PCV) constructed indigenously to respond to oil spills and other marine pollution. The PCV 201 is the legendary "Samudra Prahari" which took part in several marine fire-fighting and oil spill response operations. In this tableau, the PCV is braving the rough seas and is also undertaking pollution response operation through side sweeping arms supported by an Advance Light Helicopter with an underslung Oil Spill Dispersant Spray Bucket for spraying oil dispersant.

- INDIAN COAST GUARD





वोकल फॉर लोकल

सूचना और प्रसारण मंत्रालय की झाँकी की विषय वस्तु 'वोकल फॉर लोकल' है जो माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 30 अगस्त, 2020 को स्वदेशी स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित करने के आहवान पर आधारित है।

यह थीम चार आधार स्तंभों 'वोकल फॉर लोकल, लोकल फॉर ग्लोबल', 'आत्मिनर्भर भारत', 'मेक इन इंडिया 2.0' और '5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था' पर आधारित है। यह झॉकी अपने थ्री डी और एलईडी डिस्प्ले, अति आधुनिक स्वरूप के कारण देश के सभी वर्गों, और खासकर युवा वर्ग को विशेष तौर पर आकर्षित करती है।

झाँकी के अग्र और मध्य भाग भारतीय संस्कृति और विरासत को दर्शाते हुए विभिन्न स्थानीय उत्पादों से लेकर विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में देश की उन्नति को प्रस्तुत करते हैं। इसमें पारंपरिक भारतीय खिलौने, फूलदान, खादी और विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी के उन्नत उत्पाद जैसे उपग्रह, रोबोट, इलेक्ट्रिक कार और मिसाइल आदि का भी प्रदर्शन किया गया है। झाँकी में भीम एप और MyGov.in के माध्यम से 'डिजिटल इंडिया' को भी दर्शाया गया है। झाँकी के पिछले भाग में स्थित 'मेगाफोन' वोकल को प्रदर्शित करता है और झाँकी के अग्र और मध्य भाग में स्थित स्थानीय उत्पाद इससे निकलते हुए प्रतीत होते हैं जोकि विषय वस्तु के अनुरूप हैं। साथ ही झाँकी पर स्थित और उसके दोनों ओर चलने वाले चार—चार कलाकार कुल छह क्षेत्रों— कृषि, चिकित्सा, कला, अंतरिक्ष विज्ञान, उद्योग कामगार और सॉफ्टवेयर / स्टार्ट—अप प्रोफेशनल का प्रदर्शन करते हैं।

– सूचना और प्रसारण मंत्रालय

VOCAL FOR LOCAL

The theme of the tableau of Ministry of Information & Broadcasting is 'Vocal for Local', the clarion call given by the Hon'ble Prime Minister on 30th August, 2020 to encourage the use of indigenous products.

The theme emphasizes four important pillars 'Vocal for Local, Local for Global', 'Aatmanirbhar Bharat', 'Make in India 2.0' and '5 Trillion Dollar Economy'. This tableau endeavours to connect with all, especially the youth through a contemporary look and feel, using 3D elements, LED displays, etc.

The front and the middle of the tableau consist of various locally produced goods, showcasing a mix of tradition and heritage, as well as strides made in science and technology, ranging from Indian toys, pottery, Khadi, to high-end indigenous products such as, a satellite, a robot, an electric car and a missile. Digital India is also captured by way of depiction through BHIM app and MyGov.in. The 'Megaphone' in the rear of the tableau symbolizing 'Vocal' and the items at the front and middle, seeming to emerge from this megaphone, resonates with the theme. Four artists on tableau and four artists on either side on ground symbolically represent persons from six professions – farmer, artisan, factory worker, doctor, space scientist and software/start-up professional.

- MINISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING

स्थान संयोजक, जन संयोजक

"स्थान संयोजक, जन संयोजक" विषय पर सीमा सड़क संगठन की झाँकी अनसुने नायकों के प्रयासों की उपयुक्त मिसाल है जिनके बिलदान के बारे में अक्सर सीमावर्ती राज्यों के हर घर में बातें की जाती हैं।

'सीमा सड़क संगठन' या बॉर्डर रोड्स ऑर्गेनाइजेशन (बीआरओ) की स्थापना 07 मई 1960 को हुई थी। पिछले 60 वर्षों के दौरान बीआरओ ने हमारी सीमाओं पर दुर्गम और पहाड़ी क्षेत्रों में 60,000 किलोमीटर सड़कें, 60,000 मीटर स्थायी पुलों तथा 19 हवाई अड्डों का निर्माण किया है। लद्दाख में 19300 फीट की ऊँचाई पर उमलिंगला दर्रे में दुनिया के सबसे ऊँचे वाहन यातायात सड़क का निर्माण, कार्य कर रहे कर्मियों के अदम्य साहस भावना का गवाह है। सीमावर्ती राज्यों में इस कार्य के अलावा बीआरओ को पाँच मित्र विदेशी देशों में कार्य करने का गौरव प्राप्त है।

झाँकी का अग्रभाग बर्फ को आच्छादित ऊँचे इलाके को दर्शाता है। मध्यभाग में आगे की ओर चिनूक हैलीकॉप्टर द्वारा विशालकाय वैगन ड्रिल मशीन को उतारते हुए दिखाया गया है जिससे दुर्गम क्षेत्रों में बीआरओ के लिए काम करना संभव हो पाता है। मध्य भाग में पठानकोट के पास रावी नदी पर निर्मित अटल सेतु (बशोली) दिखाया गया है। पृष्ठ भाग में रॉक ड्रिल मशीन द्वारा रॉक कटिंग को दर्शाया है। झाँकी के आखिर में अटल टनल, रोहतांग का दक्षिण पोर्टल प्रदर्शित है। झाँकी हमारी सीमाओं से सटे इलाकों में निर्मित घुमावदार सड़कों को भी दर्शाती है।

बीआरओ का प्रसिद्ध नारा "हम पर्वतों को काटते हैं पर हृदयों को जोड़ते हैं" इसके काम की सच्ची प्रकृति एवं इस महान राष्ट्र की 'विविधता में एकता' को प्रदर्शित करता है।

- सीमा सड़क संगठन

CONNECTING PLACES, CONNECTING PEOPLE

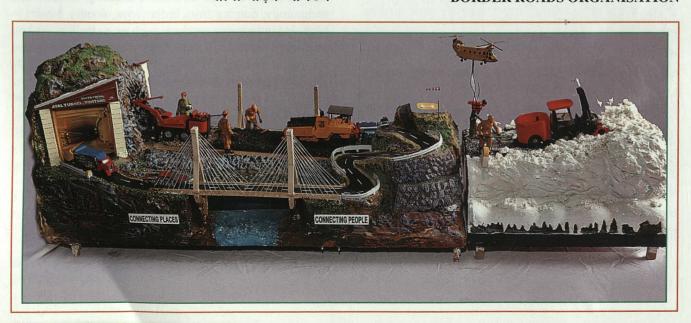
The theme of the Tableau "Connecting Places, Connecting People" of BRO is an apt recognition of the efforts of numerous unsung heroes whose sacrifices are often talked about in every household in the Border States.

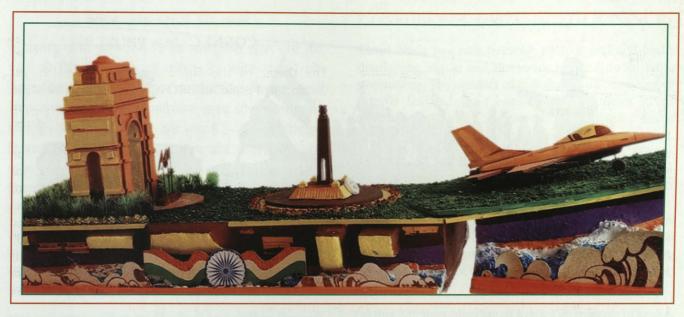
'Seema Sadak Sangathan' or Border Roads Organisation (BRO) raised on 07 May 1960, during past 60 years has constructed 60,000 Kms of roads, 60,000 mtrs of Permanent Bridges and 19 Airfields in the remote, inaccessible and mountainous borders. World's Highest Motorable Road at Umlingla Pass, at an altitude of 19300 feet in Ladakh is a witness of indomitable spirit of its personnel operating. In addition to its work in border states, BRO has the distinction of having worked in five friendly foreign countries.

The front of the tableau showcases the snow covered high altitude terrain. Chinook helicopter dropping the heavy duty wagon drill machine can be seen in the forepart of middle portion, which makes it possible for BRO to work in inaccessible areas. In the middle portion, ATAL SETU (Basholi) constructed near Pathankot on Ravi River has been depicted. In the rear portion, Rock Cutting with Rock Drill machine has been shown. At the end of the tableau, South Portal of ATAL TUNNEL, Rohtang has been shown. The tableau also showcases the curvaceous roads constructed along our borders.

'We Cut Mountains But Connect Hearts', a famous road side slogan of BRO, indicates true nature of its work and 'Unity in Diversity' of this Great Nation.

- BORDER ROADS ORGANISATION





अमर जवान

''आओ बच्चो तुम्हें दिखायें झाँकी हिन्दुस्तान की, इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की''

इस वर्ष के.लो.नि.वि. (उद्यान) भारतीय सेना के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित कर रही है।

के.लो.नि.वि. की झाँकी का विषय है "अमर जवान" जिसका अर्थ है—सैनिकों का अमर जीवन, और यह राजपथ के एक छोर पर स्थित इंडिया गेट को प्रदर्शित करती है। जहाँ यह झाँकी के पृष्ठ भाग की शोभा को बढ़ाता है, वहीं राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का स्तंभ भारतीय सशस्त्र बलों को सम्मानित करने के लिए स्मारक के रूप में बीच में सीधा खड़ा है।

एक अत्यन्त मनभावन अनुभव स्थापित करने के लिए झाँकी को फूलों के प्राकृतिक जीवंत रंगों में फूलों द्वारा तैयार किया गया है। पूरी झाँकी को आई.एन.एस. विक्रांत के आकार में ढाला गया है, जिसे भारतीय नौसेना के पहले विमानवाहक के रूप में तैनात किया गया था और जिसने 1971 के भारत—पाकिस्तान युद्ध के दौरान पूर्वी पाकिस्तान के नौसैनिकों की नाकाबंदी को लागू करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसी जहाज संरचना को झाँकी के अग्रभाग तक दर्शाया गया है, जहाँ जहाज की सुंदर छत को प्रदर्शित किया गया है तथा छत पर एक फाईटर प्लेन उडने के लिए तैयार है।

-केंद्रीय लोक निर्माण विभाग

AMAR JAWAAN

"Aao bacchon tumhe dikhayein jhaanki Hindustan ki, iss mitti se tilak karo ye dharti hai balidaan ki"

This year CPWD (horticulture) is presenting a tribute to the martyrs of Indian Army.

The tableau of CPWD on the theme "AMAR JAWAAN", which means immortal lives of the soldiers, showcases the India Gate standing astride Rajpath. While this enhances the strength of the rear portion of the tableau, the pillar of National War Memorial stands upright in the middle as a memorial to honour the Indian armed forces.

The tableau has been crafted in flowers in their natural vibrant colours to establish an extremely eye pleasing experience. The whole tableau is moulded in shape of INS Vikrant which was commissioned as the first aircraft carrier of the Indian Navy and played a key role in enforcing the naval blockade of East Pakistan during the Indo-Pakistani War of 1971. The same ship structure is resumed till the front portion where the beautiful flight deck of the ship is displayed and on the deck stands a fighter plane ready to take off.

- CENTRAL PUBLIC WORKS DEPARTMENT



भारतीय स्वतंत्रता 75वें वर्ष की ओर— पूर्व भूमिका

संस्कृति मंत्रालय की झाँकी—''भारतीय स्वतंत्रता 75वें वर्ष की ओर—पूर्व भूमिका और 15 अगस्त, 2021 से इस महत्वपूर्ण अवसर का आरंभ'' विषय वस्तु पर आधारित है।

भारत के लोगों और प्रस्तावित संसद ने 'अनेकता में एकता' के विचार को मूर्त रूप दिया, जो भारत सहस्राब्दियों से अखंड है, यह दर्शाता है कि जाति, पंथ, नस्ल या धर्म से परे, यह राष्ट्र दुनिया का सबसे बड़े लोकतंत्र, शक्ति और अधुनिक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ता है। झाँकी के अग्र भाग में सारनाथ शेर, सम्राट अशोक के योगदान और उनके एक 'राष्ट्र राज्य' के विचार के प्रतीक हैं, जो भारत की एक प्राचीन सभ्यता के मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में निहित है। भारतीय संसद के स्तंभों के बीच भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अनगिनत, विस्मृत नायकों को श्रद्धांजिल है।

पृष्ठ भाग में दर्शाये गये हैं—वैभवशाली एवं शालीन ढंग से तिरंगे को धारण करने वाले दो हाथ जो एक राष्ट्र 'भारत' के उस स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो असंख्य विदेशी आक्रमणें औपनिवेशिक कब्जों अथवा अनेक प्राकृतिक आपदाओं के बावजूद समय की कसौटी पर खरा उतरा है। झाँकी में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के स्वतंत्रता सेनानियों के सबसे प्रखर एवं प्रतिष्ठित नेताजी सुभाषचंद्र बोस को दर्शाया गया है। राष्ट्र ने 23 जनवरी, 2021 को नेताजी सुभाषचंद्र बोस की 125वीं जयंती के समारोह की शुरुआत की है। झाँकी के साथ चलने वाले सैनिक भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश की समग्रता और गरिमा को रेखांकित करती है।

– संस्कृति मंत्रालय

TOWARDS 75TH YEAR OF INDIAN INDEPENDENCE – A CURTAIN RAISER

The tableau of Ministry of Culture is based on the theme – '75th year of Indian independence – A Curtain raiser' and heralds the commencement of the celebrations of this momentous occasion from 15 August, 2021.

The people of India and the proposed Parliament embody the idea of 'Unity in Diversity' that India has stood for over the millennia, signifying that immaterial of caste, creed, race or religion, this nation stands as one and as the world's largest democracy, marches forward in strength and with confidence to face the challenges of the modern world.

On the tableau, the Sarnath Lions in the foreground symbolize the contributions of King Ashoka and his idea of a nation state, which are enshrined as the guiding principles of an ancient civilization that is India. Resting among the columns of the Indian Parliament, is a tribute to the countless unsung heroes of India's freedom struggle.

The rear portion of tableau showcases the two hands holding aloft the Tri-colour in all its majestic splendour, representing the idea of 'India', a natioin which has withstood the test of time, be it innumerable foreign aggressions, colonial occupation or natural calamities. The tableau depicts Netaji Subhash Chandra Bose, amongst the tallest and most iconic of freedom fighters of the India's independence struggle. The nation has commenced celebrations of the 125th Birth Anniversary of Netaji Bose beginning 23 January, 2021. The soldiers accompanying the tableau represent the Indian National Army, which galvanized the aspirations of the people throughout the country during the freedom struggle.

- MINISTRY OF CULTURE

तमिल लोक नृत्यों का संगम

तमिलनाडु अपने पारम्परिक विविध सांस्कृतिक लोक नृत्य तथा कला के लिए चिर काल से प्रसिद्ध है। मंदिर—उत्सवों और सामुदायिक कार्यक्रमों के अवसर पर आयोजित किए जाने वाले लोक—नृत्य ग्रामवासियों को मनोरंजन, हास्य और आनन्द प्रदान करते हैं। लोकनृत्यों में प्रसिद्ध कुछ नृत्य हैं:— पिन्नल कोलाइम, सिलम्बआइम, करगाइम, कावड़ीआइम और मयिलआइम जहाँ मयिलआइम मयूर नृत्य है, करगाइम प्राचीन लोक नृत्य है जिसके माध्यम से वर्षा की देवी मारीअम्मन की वर्षा और अच्छी फसल के लिए आराधना की जाती है। इसी तरह, कावड़ीआइम और पिन्नल कोलाइम नृत्यों की प्रस्तुति उत्सवों के अवसर पर मंदिरों में की जाती है। सिलम्बआइम नृत्य मंदिरों में नवरात्रि या अम्मन उत्सवों में विशेषकर देवी काली और देवी दुर्गा को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है।

आज 72वें गणतंत्र दिवस पर दिल्ली के सात डीटीईए विद्यालयों के 126 विद्यार्थी उक्त पाँच लोकनृत्य प्रस्तुत कर रहे हैं। ये बच्चे रंग बिरंगे परिधानों में अपनी प्रस्तुति से सम्मोहित कर रहे हैं।

दिल्ली तमिल शिक्षा एसोसिएशन (डीटीईए),
 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नई दिल्ली

हम फिट तो इंडिया फिट

राष्ट्रीय खेल दिवस 29 अगस्त 2019 (हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद जी के जन्मदिवस) के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा फिट इंडिया मूवमेंट शुरू किया गया, जिसका मूल उद्देश्य हर भारतीय के दैनिक जीवन में शारीरिक गतिविधियों और खेलकूद को सम्मिलित करना है।

शरीरमाद्यंखलु धर्म साधनं, पहला सुख निरोगी काया और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है आदि उक्तियों से स्वस्थ शरीर की उपयोगिता स्वतः परिलक्षित है।

आज वैश्विक महामारी कोविड—19 ने दुनिया को सिखा दिया है कि जीवन में स्वास्थ्य से ऊपर कुछ भी नहीं है। इन परिस्थितियों में फिटनेस जीवनचर्या का और अधिक महत्वपूर्ण भाग बन गयी है।

"मिलकर बढ़ें आओ मंजिल की ओर, लाएं नए फिट इंडिया का दौर"। इसी मूल मंत्र के साथ राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, यमुना विहार, दिल्ली की 102 छात्राओं द्वारा एक अदभुत कार्यक्रम प्रस्तुत किया जा रहा है।

> -राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, यमुना विहार, दिल्ली

CONFULENCE OF TAMIL FOLK DANCES

Tamil Nadu has rich tradition of folk arts and crafts displaying skills and dexterity handed down from generations. The conduct of folk dances on occasions of temple festivals and community functions gives entertainments, mirth and merry to the villagers. Some of these folk dances are Pinnal Kolattam, Silambattam, Karagattam, Kavadiattam and Mayilattam. Where Mayilattam is peacock dance, Karagattam is an ancient folk dance to invite the rain goddess Mariamman to shower her blessings for good harvest. Similarly, Kavadiattam and Pinnal Kolattam are performed in temples during the festive seasons. Silambattam is performed in temples during Navrathri or Amman festivals in praise of the female deities especially Kali or Durga.

On this 72nd Republic Day of India, 126 students of seven DTEA Schools of New Delhi, descent on Rajpath displaying these five folk dances. These children in colourful attire are mesmerizing with their performance.

- Delhi Tamil Education Association (DTEA) Sr. Sec. Schools, New Delhi

HUM FIT TOH INDIA FIT

Our Prime Minister launched the "Fit India Movement" on the occasion of National sports day on 29th August 2019 (birth anniversary of hockey wizard Major Dhyan Chand), which aims at encouraging people to include physical activities and sports in their everyday lives.

This body is surely the foremost instrument of doing [good] deeds, Health is Wealth and healthy body is the home of a healthy brain...all these saying itself describe the importance of a healthy and physically fit body.

In this year of Covid-19 pandemic, the world has learnt that there is nothing more important than good health. Fitness has now become an integral part of our daily lives.

In the creation of a new India, "Milkar badhein aao manzil ki aur, laaein Fit India ka Daur" "(Move together to the destination, Bringing Fit India Round)" with the same basic mantra, 102 students of Government Girls Senior Secondary School, Yamuna Vihar, Delhi are presenting a wonderful performance with high spirit.

- Government Girls Senior Secondary School, Yamuna Vihar, Delhi

बजासाल

बजासाल ओडिशा के कालाहांडी जिले का एक समृद्ध पारम्परिक लोकनृत्य है। ये लोकनृत्य जनजातीय विवाह के अवसर से संबंधित है। "बजा" द्योतक है ढोल जैसे वाद्ययंत्र का और "साल" का अर्थ है वो एक निर्धारित स्थान जहाँ इसे बजाया जाता है। विवाह से पहले पारम्परिक रीति—रिवाजो के अनुसार कई पूर्व—विवाह कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विवाह पश्चात जब वर तथा कन्या का गृहप्रवेश का समय आता है तब उर्जा से लबालब युवक तथा युवतियाँ वाद्ययंत्रों के साथ हर्षोल्लास में मगन हो ये सुंदर नृत्य करते हैं जिसे बजासाल कहा जाता है।

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, कोलकाता, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, के 80 लोक कलाकार इस बजासाल नृत्य की प्रस्तुति दे रहे हैं।

पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, कोलकाता

आत्मनिर्मर भारत

"आत्मनिर्मर भारत प्रस्तुति"—भारत को पूर्ण रूप से आत्मनिर्मर बनाने के सपने को साकार करने की ओर सशक्त कदम। गणतंत्र दिवस को सही मायने में मनाने हेतु आत्म निर्मरता का आगाज अति आवश्यक है और इसमें हर भारतीय का योगदान ज़रूरी है। आइये आज मिलकर यह आवाज उठायें एवं भारत को आत्मनिर्मर बनायें और अपने देश को विश्व पटल पर उच्चतम स्थान दिलायें।

ऐतिहासिक राजपथ से आज माउंट आबू पब्लिक स्कूल और विद्या भारती स्कूल, रोहिणी के 92 उत्साहित छात्र (36 छात्र एवं 56 छात्राएं) भारत को आत्मिनर्भर बनाने का आह्वान करते हुए, खूबसूरत अंदाज़ एवं पारम्परिक परिधान में अपने मंत्रमुग्ध नृत्य द्वारा भारत के आर्थिक विकास, कृषि विकास, तकनीकी विकास, नई शिक्षा नीति, कौशल विकास और महिला सशक्तिकरण के साकार दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

—माउंट आबू पब्लिक स्कूल एवं विद्या भारती स्कूल, रोहिणी, दिल्ली

BAJASAL

The Bajasal is one of the most beautiful folk dances of Kalahandi, Odisha. This dance is related to the marriage occasions of tribals. Here 'Baja' means the instrument, a drum played in the dance and 'Sal' means the place where these instruments are played. Before the marriage function, many pre-marriage functions are held according to their traditional rites and rituals. After the completion of marriage, when the bride and the groom enter the house, the energetic youth come in contact with the instrumentations with a great desire and perform their beautiful dance. This dance is known as Bajasal.

80 folk artists of Eastern Zonal Cultural Centre, Kolkata, Ministry of Culture, Govt. of India are presenting the folk dance Bajasal.

- Eastern Zonal Cultural Centre, Kolkata

AATMA NIRBHAR BHARAT

"Aatma Nirbhar Bharat" is a vision for a Self Reliant India. India of our dreams and aspirations. This is a reminder of the potential we possess. Together we can turn any crisis into an opportunity. Our collective determination in the right direction will place India on the zenith & will reclaim India's status of Vishwa Guru i.e Guru & Inspiration to the world.

From the historic Rajpath today, 92 Vibrant Students (36 Boys and 56 Girls) of Mount Abu Public School and Vidya Bharati School, Rohini are invoking entire India to build an Aatma Nirbhar Bharat. Enthralling dance performance on mesmerising tune of song "Aatma Nirbhar Bharat" celebrates spirit of New India. Lyrics and dance moves, blended with traditional Indian music notes, recognise India's growing stature in the field of economy, agriculture, education, health, innovation, skill and women empowerment.

- Mount Abu Public School & Vidya Bharati School, Rohini, Delhi

Printed by Vibrant Inc., Mob.: 8929005198

